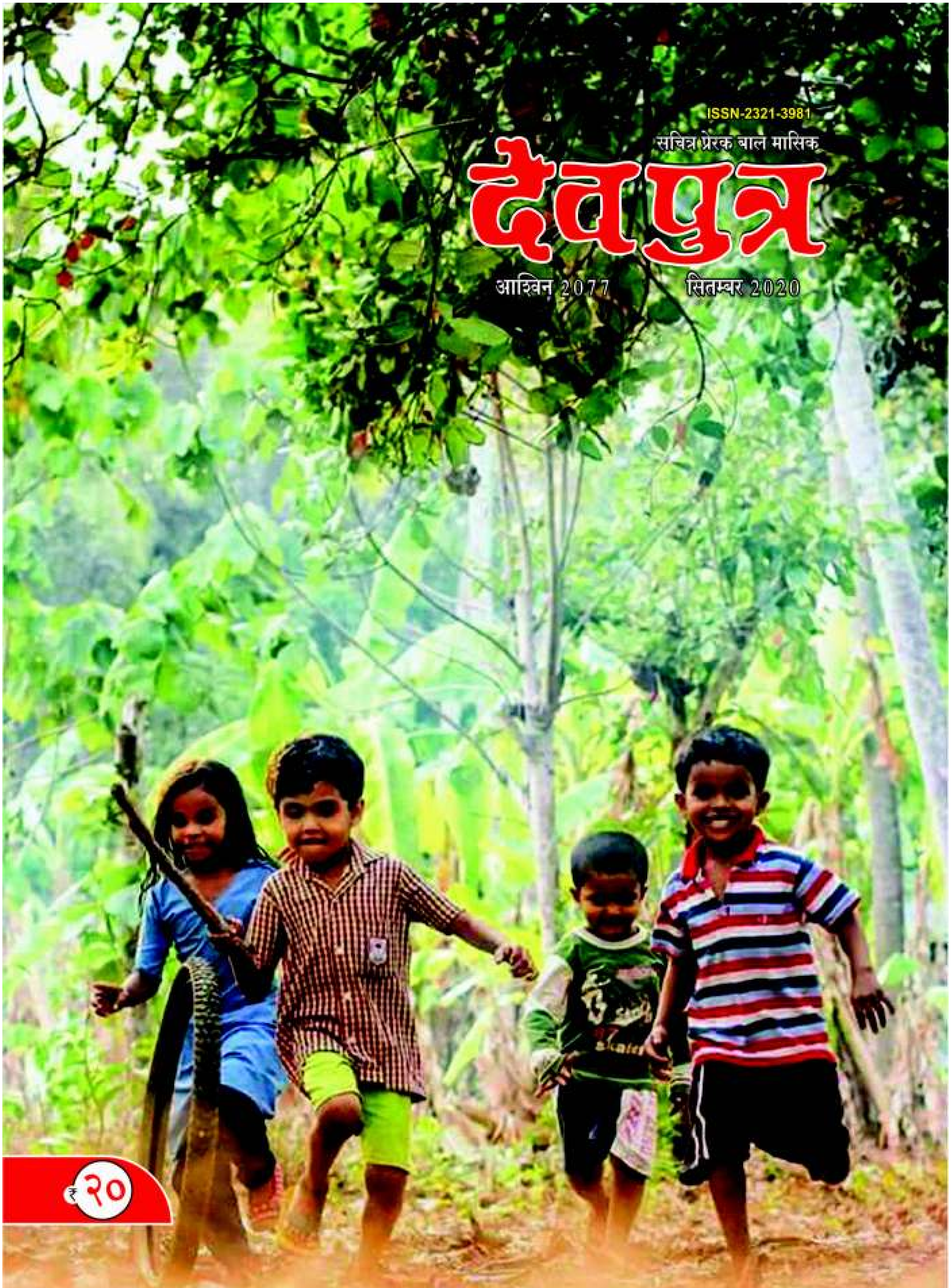
ISSN-2321-3981
सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र
आश्विन 2077
सितम्बर 2020
₹२०

हिन्दी का गुणगान करें

कविता

डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ

बाल रूप की क्रीडा इसमें,
सूरदास की प्रिय वाणी
कृष्ण भक्ति का बिगुल बजाती,
ब्रज की भाषा कल्याणी
तुलसी ने तो रामचरित की,
महिमा इसमें ही गाई
अखिल विश्व में फैली जाकर,
रामकथा जन मन भाई
भारतेन्दु ने भाव हृदय का,
प्रेमचन्द ने मान दिया
मान्य द्विवेदी जी ने इसको,
पाल पोसकर बड़ा किया
पंत महादेवी प्रसाद ने,
छायावादी शिल्प भरा।
मस्त निराला जी ने इसमें,
प्रगतिवाद का दीप धरा।
मैथिल कोकिल की प्रिय वाणी,
युगों युगों तक गूंजेगी।
भारत माता की बिन्दी यह,
शंख विजय का फूंकेगी।

- नोएडा (उ.प्र.)

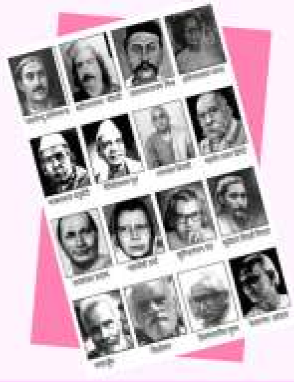

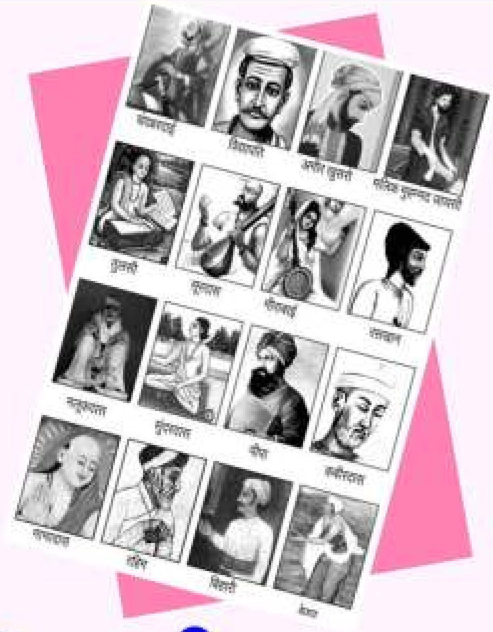

हिन्दी

कविता

डॉ. प्रीति प्रवीण खरे

हिन्दी के हैं रूप अनेक
हिन्दी में हैं नाम कई।

रूप में आती बोलियाँ
जैसे मिश्री की गोलियाँ

रूप में आते गाँधी-बापू
जैसे सत्य अहिंसा काबू।

रूप में आती लक्ष्मीबाई
जैसे शस्त्र उठाती माई।

नाम में आते राम-रहीम
जैसे एक रूप दो जीव।

हिन्दी के हैं रूप अनेक
हिन्दी में हैं नाम कई।

- भोपाल (म.प्र.)

विश्व का सर्वाधिक प्रसार संख्या कीर्तिमान

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

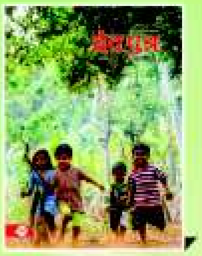

भाद्रपद 2076 • वर्ष 41
सितम्बर 2020 • अंक 3

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	20 रुपये
वार्षिक	:	180 रुपये
त्रैवार्षिक	:	500 रुपये
पंचवार्षिक	:	750 रुपये
आजीवन	:	1400 रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	130 रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
40, संवाद नगर,
इन्दौर 452001 (म. प्र.)
दूरध्वनि: (0731) 2400339, 439

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहनो ,

कई बार हम पढ़ाई करते समय हमको मिलने वाली सुविधा और असुविधा के बारे में बात करने लगते हैं। विशेषकर इन दिनों जबकि सभी विद्यालय बंद पड़े हैं और कोरोना के भय से हम सबका घरों से बाहर निकलना भी दूभर हो गया है, ऐसे में पुस्तकों का समय पर प्राप्त न होना, स्कूलों विद्यालयों का न खुलना, शिक्षकों से हमारा सीधा संवाद नहीं होना जैसे अनेक बहाने पढ़ाई ना करने के लिए अथवा परीक्षा परिणाम बहुत अच्छा नहीं आने के लिए हम सब बनाने लगते हैं।

आज अपनी बात करते हुए मैं आपको एक ऐसा उदाहरण भी देना चाहता हूँ जिस बिटिया ने कभी भी अपनी पढ़ाई के लिए न तो परिवार की गरीबी को, न माता-पिता की आय को और न ही तकनीकी असुविधा को बहाना बनाया। ऊपर के चित्र में आप जिस बिटिया को पढ़ाई करते हुए देख रहे हैं उसका नाम सुनीता सुतार है। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि महाराष्ट्र प्रदेश के एक छोटे से ग्राम कणकवली की रहने वाली सुनीता बिटिया ने इन्हीं परिस्थितियों में पढ़ाई करते हुए कक्षा 12वीं बोर्ड की परीक्षा में 98 प्रतिशत अंक प्राप्त कर प्रावीण्य सूची में अपना स्थान सुरक्षित किया था। चित्र को देखकर आपको समझ में आ रहा होगा कि इस बिटिया के माता-पिता की आर्थिक स्थिति भी अच्छी नहीं है और दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्र की रहने वाली है। इन कारणों से उसने अपना उत्साह कम ना होने दिया और बारहवीं कक्षा के बाद उसने आगे यूपीएससी की तैयारी करना तय कर लिया। इस तैयारी के लिए स्वाभाविक रूप से इंटरनेट कनेक्शन की आवश्यकता होती है किंतु दुर्भाग्य देखिए कि सुनीता को अपने गाँव में इंटरनेट कनेक्शन भी ठीक प्राप्त नहीं हो रहा था। कवरेज की कमी के कारण वह नेट का उपयोग कर पाने में भी असमर्थ थी। ऐसे में उसने हिम्मत न हारते हुए गाँव से सटी हुई पहाड़ी के सबसे ऊपरी छोर पर एक झोपड़ी बना ली और उस झोपड़ी में अपनी अध्ययन सामग्री लेकर पहुँच गई। पहाड़ी के ऊपरी स्थल पर इंटरनेट का कवरेज बहुत अच्छा मिलने लगा और सुनीता सुतार की पढ़ाई इस समय सतत जारी है।

यह चित्र हमें प्रेरणा दे रहा है कि जीवन में असुविधाएं तो बहुत होती हैं किंतु असुविधाओं से यदि हम घबरा गए तो जीवन में सफलता कभी भी हमारे चरण नहीं चूमेगी। हमारे वरेण्य प्रधानमंत्री जी आदरणीय नरेंद्र मोदी जी के इस वाक्य को स्मरण रखिए - चुनौतियां तो आती हैं लेकिन उन चुनौतियों को अवसर में बदलना यदि हमें आता है तो हमारी सफलता में कभी कोई बाधा नहीं आ सकती।

इस उदाहरण के माध्यम से हम सब सोचें कि ईश्वर की कृपा से हम सब को कितनी सुविधाएं प्राप्त हुई है?

इस समय हमारी आनलाइन कक्षाएं विद्यालय के माध्यम से चल रही हैं। इन चुनौतियों को अवसर में बदलते हुए हम अपने आचार्य परिवार के संपर्क में हैं इस हेतु तकनीकी को धन्यवाद देते हुए हम सब भी लगातार अपना अध्ययन जारी रखें।

अपने अभिभावकों को इस विषय में संवेदनशील बनाइये कि हमारे शिक्षक भी हमारे परिवार का हिस्सा हैं, उनको हुआ कोई भी कष्ट हमारा पारिवारिक कष्ट होगा इसलिए विद्यालय का शुल्क समय पर जमा करते रहें। बहुत जल्दी हम सब अपने-अपने विद्यालयों में फिर से उसी पुराने आत्मीय और पारिवारिक वातावरण में पहुंचेंगे। आप सबको आने वाले सत्र की ढेर सारी शुभकामनाएं।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- चार चाँद - कुँवर प्रेमिल 05
- पिताजी और पर्यायवाची - श्यामनारायण श्रीवास्तव 16
- अलभ्य की चिंता - गौरव वाजपेयी 'स्वप्निल' 32
- वह सच बोला - गोविन्द शर्मा 36
- बन्दर की नाक - सुरेशचन्द्र मेहरा 40
- हौंसला - सुशील सरित 46

नाटक

- दादी का दर्द शंकरलाल माहेश्वरी 08

आलेख

- भारतीय नदियों का... नरेन्द्र देवांगन २२

यात्रा वृतान्त

- बाघा कौए की... - डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' 12

प्रसंग

- समाज का रूप डॉ. श्याममनोहर व्यास 25

कविता

- हिन्दी का गुणगान करें - डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ 02
- हिन्दी - डॉ. प्रीति प्रवीण खरे 02
- शिक्षक दिवस - डॉ. विनोदचंद्र पाण्डेय 20
- कभी घमण्ड न करना - डॉ. वेदमित्र शुक्ल 'मयंक' 21
- यही राष्ट्र के प्राण है - पंकज कुमार झा 50

चित्रकथा

- अगरबत्ती की खुशबू - देवांशु वत्स 11
- अंगूर - संकेत गोस्वामी 35
- अनोखा उपहार - देवांशु वत्स 43

स्तंभ

- संस्कृति प्रश्नमाला - 10
- सचित्र विज्ञान वार्ता - संकेत गोस्वामी 18
- देश विशेष - श्रीधर बर्वे 26
- आपकी पाती - 34
- स्वयं बने वैज्ञानिक - डॉ. राजीव तांबे/सुरेश कुलकर्णी 38
- आओ ऐसे बनें मदनगोपाल सिंघल 39
- यह देश है वीर जवानों का (१०) - 42
- बिषय एक कल्पना अनेक -
  - -भगबती प्रसाद गौतम 44
  - -प्रभाष मिश्र 'प्रियभाष' 44
  - - शुभदा पाण्डेय 45
- पुस्तक परिचय - 48
- बड़े लोगों के हास्य प्रसंग - 49
- छः अगुल मुस्कान - डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव 50

बाल प्रस्तुति

- रम्मो और कल्लो - ओशिन जादौन 30

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास बैंक - स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक- **38979903189 चालू खाता (Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - **''मन्दसौर संजीत मार्ग SSM''** आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

चार चाँद

कहानी

कुँवर प्रेमिल

आज बच्चों की सभा शर्मिष्ठा दीदी के घर जमी थी। यहाँ पर अंत्याक्षरी खेलने के लिए मोहल्ले के बच्चे जमा हो रहे थे। ये सभी अंग्रेजी माध्यम के बच्चे थे।

वे सब अपनी हिन्दी भाषा सुधारने के लिए प्राय: अंत्याक्षरी खेला करते थे। इस खेल में शर्मिष्ठा की माताजी निर्णायक हुआ करती थी। वे बच्चों की गलतियाँ सुधारा करती थीं। एक निश्चित समयावधि में बच्चे अंत्याक्षरी खेलकर अपना हिन्दी ज्ञान सुधारा करते थे।

शर्मिष्ठा ने शुरुआत की-हिंदी ज्ञान बढ़ाने, करना है कुछ काम, शुरु करो अंत्याक्षरी लेकर 'च' का नाम।

बच्चों ने तालियां बजाई

गगन ने कहा- **चादर**

प्रीतम ने कहा - **चाय-चटनी**

निर्णायक ने कहा- **चाय** और **चटनी** ये दो शब्द हो गये। हमें एक ही शब्द रखना है।

शीतल - **चम्मच**

श्रेया ने कहा - **चोटी**

इस पर निर्णायक बोली - बच्चो! चोटी के दो अर्थ होते हैं। एक तो लड़कियाँ अपनी कंघी, चोटी कर विद्यालय जाती है और दूसरी 'चोटी' यानी शिखर जो पहाड़ का सबसे ऊँचा भाग होता है।

लड़कियों ने अपनी अपनी चोटी हिलाकर बताई- यह है चोटी। यह भी तो हमारे सिर-शिखर पर विद्यमान है।

सबको एक साथ हँसने का मौका मिल गया। तभी रिया ने अपनी स्मरण शक्ति पर जोर डालकर कहा- **चीनी**

निर्णायक बोली - अरे वाह रिया, तुमने सोचने के लिए कुछ ज्यादा ही समय ले लिया। चीनी यानी 'शक्कर' जिससे घर में प्रतिदिन चाय बनती है। सुबह सुबह चाय न मिल तो दिन की शुरुआत कैसे हो? है न।

स्वीटी ने बात आगे बढ़ाई - **'च' चाँद का** ।

'बहुत बढ़िया स्वीटी! चाँद का नाम लेकर तुमने एक अच्छा काम किया है। गए साल हमारे देश द्वारा भेजा गया चंद्रयान-2 चाँद पर उतरने वाला था। इससे चाँद पर की बहुत सी जानकारियाँ हमें मिलने वाली थीं- निर्णायक महोदया ने कहा।

-अमेरिका, रूस, चीन के बाद चौथा नंबर तब हमारा लगने वाला था यान को चंद्रमा पर भेजने में।

शर्मिष्ठा ने कहा- अब तुम लोग अपने अपने घर जाओ। कल शाम को हम सब इकट्ठे होकर चाँद पर चर्चा करेंगे। तुम्हे तब यानी सितम्बर 2019 के अखबारों में भी चाँद की पर्याप्त जानकारी हमें मिल जाएगी।

*****

शाम को जब बच्चे इकट्ठे हुए तो उनके चेहरे उतरे हुए थे। शर्मिष्ठा की माताजी यानी निर्णायक महोदया बोली- अरे! क्या हुआ जो तुम सबके चेहरे उतरे हुए हैं?

प्रीतम बोला- दीदी जी! वह चंद्रयान तो फेल हो गया था। हमारा पैसा और परिश्रम सब बेकार हो गया।''

अरे ऐसा कुछ नहीं है। अनुसंधान में यांत्रिक गड़बड़ी रह गई होगी। लेकिन दोबारा हम अवश्य सफल होंगे। गलतियाँ सुधार ली जाएंगी- शर्मिष्ठा दीदी ने अपनी बात रखी।

श्रेया ने कहा- दीदी जी, केवल 2.1 किमी ही तो रह गया था चंद्रमा। मेरे माँ-पिताजी दुखी हो बता रहे थे।

काकी मुस्कुराकर बोलीं- बेटा! पृथ्वी पर जैसा किलोमीटर का नाप अंतरिक्ष में नहीं होता। बार-बार अनुसंधान कर के समस्या का हल निकाल लिया जाता है।

श्रेया बोली - हाँ दीदी जी! एक कविता है।

करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निशान।।

बहुत अच्छा- निर्णायक बोली

इसी तरह चंद्रायान की खामियां दूर होती जाएंगी फिर देखना, हम कैसे सफल नहीं होते। चाँद पर हमारा तिरंगा लहरायेगा और 'चार चाँद' लगाएगा।''

सभी बच्चे आशा भरी नजरों से देखने लगे।

शर्मिष्ठा बोली- चलो, आज यहीं तक कल सभी बच्चे अपनी तैयारी कर अपनी-अपनी बात यहाँ रखेंगे। जय हिन्दी।

सभी बच्चों ने एक साथ 'जय हिन्दी' कहा और अपने अपने घर चले गए।

- जबलपुर (म.प्र.)

|| शब्द क्रीड़ा ||

हिन्दी की हमजोली

बच्चो! अपने देश में अनेक भाषाएँ बोलियाँ बोली जाती है इनमें परस्पर अनेक शब्दों का आदान प्रदान भी चलता रहता है जैसी सगी बहनें या पक्की सहेलियाँ अपनी चीजें एक दूसरे को देती-लेती रहती है। नीचे दिए गए अक्षरों में आपको हिन्दी की ऐसी ही 10 सहेलियाँ के नाम ढूंढना है साथ ही उन प्रमुख प्रांतों के नाम भी जिनमें वे मुख्य रूप से बोली जाती है। इसके लिए आपको क्रम से दाएं बांए ऊपर नीचे, सीधी या उल्टी या तिरछी दिशा में क्रमवार अक्षर जोड़ना होंगे एक अक्षर दो बार भी उपयोग हो सकता है। 10 सही जोड़ी बनाने वाला उत्तम, 8 जोड़ी बनाने वाला मध्यम और 5 जोड़ी बनाने वाला सामान्य बुद्धिमान समझा जावेगा।

(सही उत्तर इसी अंक में कहीं।)

के	म	हा	ल	ष्ट्र	त	प	मि	मा	डो	न्न	ग	ल	गु	क
ज	र	रा	र्ना	रा	पं	बं	आ	बं	क	गु	ला	ते	ल	म
ती	म	ल	या	ल	म	क	श्चि	न्ध्र	म	ड़	ल	री	श्मी	गु
क	गु	आ	बी	ट	ठी	जा	ती	ग	प्र	गु	ज	रा	ती	गु
त	मि	ल	ना	डू	ज	म	रा	या	जा	दे	ब	रा	ज	रा
म	मि	न्ध्र	उ	पं	रा	ल	हा	म	म	म	श	रा	र	क
त	ना	जा	डू	क	न्न	ड़	ल	रा	ल	न्न	त	ते	ती	ठी
म	हा	रा	क	ठी	ष्ट्र	पं.	ठी	उ	ष्ट्र	ड़ि	म	ड़	या	क
पं	ड़ि	बी	र्ना	त	कि	या	रा	श्मी	त	ल	ड़ी	हा	श्मी	रा
के	म	ब	ट	आं	ल	म	न्ध्र	ज	पं	हा	ब	र	उ	डो
ल	जा	र	क	गा	श	गु	र	ल	या	जा	म	सा	ष्ट्र	ग
के	र	रा	बं	दे	ल	गु	म	रा	पं	रा	बी	म	डो	री
ज	या	म	त	ग	गु	बं	ना	डू	ठी	उ	क	न्न	ड़	क
आ	श्चि	ल	ल	मि	ला	ग	ज	रा	ड़ी	रा	ड़ि	ठी	ती	श्मी
प	न्ध्र	त	म	प्र	ल	र	ला	सा	बं	री	मा	या	ली	ग

दादी का दर्द

नाटक

शंकरलाल माहेश्वरी

पात्र परिचय

अविनाश - राकेश के पिता
राकेश - अविनाश का पुत्र
सुधा - अविनाश की पत्नी
सुमित्रा - अविनाश की दादी

सुधा - माँजी! आज अविनाश की शादी की आठवीं वर्षगांठ है। इसके कारण हम लोग उनके मित्रों को साथ लेकर अप्सरा होटल में डीनर के लिए जा रहे हैं। गाड़ी बाहर खड़ी है बस जा ही रहे हैं।

सुमित्रा - बेटा! मेरे कल का उपवास था। सुबह भी खाना नहीं खाया। जाने से पहले यदि मेरे लिए खाना बना देती तो...

सुधा- इतना समय नहीं है माँजी, हमारे पास कि मैं आपके लिए खाना बना सकूं। हमारे जाने का समय भी हो गया है। देर हुई तो फिल्म भी छूट जाएगी और होटल में खाना भी नहीं खा पायेंगे। इसलिए आप ही खाना गैस पर बना कर खा लेना।

सुमित्रा- बेटा! मैने कभी गैस पर खाना नहीं बनाया। गैस जलाना और बुझाना भी मुझे नहीं आता। गैस पर खाना बनाना मेरे बस की बात नहीं है। तुम ही मेरे लिए खाना बना दो। मैं तुम्हारी मदद कर देती हूँ।

सुधा -नहीं माँजी, मुझसे यह काम नहीं होगा। एक दिन की बात तो है नहीं, आप खुद गैस पर खाना बनाना क्यों नहीं सीख लेती?

राकेश - माँ ! दादी के लिए खाना नहीं बनेगा तो वह भूखी रह जाएगी ना। कल से ही तो भूखी है, बना क्यों नही देती?

सुधा - चुप रहो राकेश! तुम अपना काम करो। मेरा यही काम है क्या?

अविनाश- माँ! आज अपने मकान के पिछवाड़े ही हनुमान मंदिर में कोई भण्डारा है। जयपुर वाले कोई सेठजी द्वारा ब्राम्हण भोजन कराया जा रहा है सुना है कई प्रकार की मिठाइयाँ बनाई है। तुम अंधेरा हो जाने पर वहाँ खाना खा लेना। भोजन देर तक चलता रहेगा।

सुमित्रा - बेटा! अपने न्यौता थोड़े ही आया है वह तो ब्राह्मण भोजन हैं। कोई बिन बुलाये भी जाता है क्या? कोई देखेगा तो क्या कहेगा?

अविनाश - कौन देखता है माँ? रात के धुँधलके में तुझे कोई नहीं पहचानेगा। तुम खाना खाकर तुरंत चली आना। वहाँ ठहरना मत।

सुमित्रा - (मन मसोस कर) अच्छा बेटा! तुम्हारी यही इच्छा है तो मैं देर रात जाकर खाना खा आऊंगी।

(अविनाश, राकेश, सुधा और दोस्त फिल्म के लिए प्रस्थान कर जाते हैं। दादी माँ लकड़ी के सहारे हनुमान मंदिर की ओर लड़खड़ाती हुई जाती है।)

अविनाश - आज की फिल्म कितनी बढ़िया थी। महिला अत्याचारों पर अच्छी बहस थी। भोजन भी लाजवाब था। आनन्द आ गया।

राकेश - पिताजी! दादी भी आज साथ होती तो और अच्छा रहता । पिताजी! एक बात कहूँ?

अविनाश - हाँ -हाँ बोलो बेटा! पिताजी मैं जब बड़ा आदमी बन जाऊँगा। मेरी शादी हो जाएगी खूब पैसा कमाऊंगा और पैसे वाला बन जाऊंगा तो जानते हो मैं क्या करूँगा?

अविनाश - बताओ क्या करोगे बेटा?

राकेश - एक आलीशान बड़ा सा मकान बनवाऊँगा, वह भी ऐसी जगह होगा, जहाँ पास में कोई मंदिर होगा ताकि माँ को भी कभी भूखा नहीं सोना पड़े। किसी सेठ के भण्डारे में जाकर अपनी भूख मिटा सकेगी। आप आशीर्वाद दें पिताजी, मेरा यह सपना अवश्य साकार हो।

अविनाश - चुप रह नालायक! कैसी बातें करता है?

राकेश - मैं वही तो करने के लिए कह रहा हूँ जो आपने दादी के लिए किया है। इसमें बुराई भी क्या है। आप ही के पदचिन्हों पर चलकर आपका नाम रोशन करूँगा।

*****

सुमित्रा - सुधा बेटा! मेरा चश्मा कहीं देखा है क्या?

सुधा- आपको हजार बार कह दिया कि अपने चश्मे को सम्भाल कर रखा करें, हमें क्यों परेशान करती हैं आप? मेरा यही काम है क्या? देख लीजिए, कमरे में ही कहीं होगा।

सुमित्रा - आँखों से दिखाई देता तो पहले ही देख लेती। चश्मे के बिना कुछ भी तो दिखाई नहीं देता। एक बार आकर तुम देख तो लो बेटा!

सुधा- अभी ठहर जाओ, बहुत काम पड़ा है। उनके कपड़ों पर इस्त्री करनी है। राकेश का गृहकार्य पूरा कराना है। नहाना बाकी है। बाजार भी जाना है। आपका चश्मा ही ढूँढती रहूँगी क्या? मेरे और भी कई काम हैं। चश्मा सम्भाल कर रखा करें ना। हम लोगों को परेशानी तो नहीं हो। आपको तो कुछ काम है नहीं।

सुमित्रा -बेटा! अब सम्भाल कर रखूंगी। इस बार तो आकर तुम ढूँढ दो। तुम्हारा भला होगा।

सुधा- माँजी! आप हमेशा परेशान करती रहती हैं। अपनी चीजों को सम्भाल कर भी नहीं रख सकती। कहीं भी भूल जाती हैं और दूसरों को परेशान करती रहती हैं तुम्हारे तो कोई काम हैं नहीं। बस हमें दुखी करती हैं।

अविनाश - माँ! क्यों परेशान करती रहती हो बेचारी

सुधा को? कितना काम रहता है इसे। तेरा चश्मा ढूँढना भी कोई इसका काम है क्या? याद करो, कहीं रखा होगा। जाकर खुद ही देख लो। यह कोई एक दिन का काम तो है नहीं। पहले भी कई बार चश्मे के लिए परेशान किया है तुमने सुधा को। बेचारी तुम्हारे काम ही के लिए है क्या। अपनी चीज खुद को ही सम्भाल कर रखना चाहिए ना?

सुमित्रा - बेटा! भविष्य में ऐसा नहीं होगा। मुझे दिख नहीं रहा है। आँखों में अँधेरा सा छाया हुआ है। इस बार तो मेरी मदद कर दो बेटा।

(कुछ देर बाद)

अविनाश - सुधा! मेरा कार्यालय का समय हो गया है। मैंने अपनी घड़ी कहाँ रखी है? देखना तो...

(तभी राकेश बोल पड़ा)

राकेश - पिताजी! आपको तो दिखता है ना, अन्धे तो हो नहीं। आप ही सम्भाल लो। क्यों माँ को परेशान करते हो? चश्मा भी नहीं लगता है आपके दादी की तरह। अपना काम खुद भी करना सीखें। जब आँखें सही सलामत हैं तो दूसरों को क्यों परेशान करते हैं? ढूँढ लो अपनी घड़ी को आप ही। कमरे में ही होगी। कहीं मिल ही जाएगी। दूसरों को व्यर्थ ही परेशान करते हैं आप।

अविनाश - बेटा राकेश! यह क्या तरीका है तुम्हारा बात करने का। अपने से बड़ों के साथ इस तरह बात करते हैं क्या? थोड़ा शिष्टाचार सीखो। क्या मास्टर जी ने यही सिखाया है तुम्हें? बड़ों से कैसे बात करना चाहिए। यह भी नहीं मालूम।

राकेश- नहीं, पिताजी, यह सब विद्यालय में नहीं, आप ही से सीखा है। विद्यालय में मास्टर जी से नहीं।

माँ भी दादी माँ से इसी तरह बात करती हैं और आप भी।

- आगूंचा (राज.)

संस्कृति
प्रश्नमाला

- महाराजा दशरथ को पुत्र प्राप्ति हो, इसके लिए पुत्रेष्टि यज्ञ किसने किया था?
- महाभारत काल में आजन्म विवाह न करने की प्रतिज्ञा किसने की थी?
- ईसा मसीह ने वेद, योग आदि की शिक्षा किन स्थानों पर प्राप्त की?
- अपने देश के किस मंदिर की परिक्रमा का गलियारा सबसे लम्बा है?
- एक दिन-रात में कितने मुहूर्त और कितनी घटी होती है?
- बौद्ध सम्राट अशोक ने भारत में यज्ञों पर रोक लगा दी थी। रोक के बाद पहला अश्वमेध यज्ञ किस सम्राट ने किया?
- जैन ग्रंथ स्थनंग सूत्र में क्रमचय व संचय (परमूटेशन-काम्बिनेशन) का वर्णन है। यह ग्रंथ कितना प्राचीन है?
- 18 अप्रैल 1856 के दिन शिवपुरी में तात्या टोपे के स्थान पर फाँसी पर कौन अमर बलिदानी चढ़ गया?
- अंग्रेजों से युद्ध करते रहने के लिए महावीर तात्या टोपे का आर्थिक सहयोग सीकर (राजस्थान) के किस धनपति ने किया था?
- इजरायल के गुप्तचर राफी ईटान ने बाईस सालों तक पीछा कर किस जर्मन नाजी अपराधी को पकड़ा था?

(उत्तर इसी अंक में) (साभार-पाथेय कण)

अगरबत्ती की खुशबू
चित्रकथा: देवांशु वत्स
छुट्टी के दिन राम देवपुत्र पढ़ रहा था। माँ-पिताजी घर पर नहीं थे। तभी...
डिंग डांग
अभी कौन आया होगा?
अगरबत्ती ले लो!
माँ, घर पर नहीं है!
वाह! अब तो मैं इसे बेच कर ही जाऊंगा!
कोई बात नहीं। तुम खरीद लो। माँ बहुत खुश होगी!
नहीं चाहिए भैया!
यह विशेष अगरबत्ती है बेटा! इसकी खुशबू से याददाशत भी तेज होती है।
अच्छा!
हाँ, और यह तुम्हारे घर में जलेगी तो इसकी खुशबू पड़ोसियों के घर तक जाएगी!
ऐसा क्या?
हाँ, बिल्कुल!
भैया! अगर ऐसी बात है तो...
...इसे आप मेरी पड़ोस की काकी को बेच दो!!
गुर्रर!

बाघा कौए की राजस्थान यात्रा

यात्रा वृत्तांत

डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता'

एक दिन बाघा कौए ने अपनी पिता रागी से कहा- "पिताजी, इस बार पितृ पक्ष में कहीं नई जगह घूमने चलिए।" पिता रागी ने कहा- "हाँ, पिछली बार तो मध्य प्रदेश के जबलपुर जिले में भेड़ाघाट में ही पितृ पक्ष का आनंद उठाया था। इस बार राजस्थान की काग सभा के अध्यक्ष 'काँव काँव जी' का आमंत्रण आया है। तुम्हारी इच्छा भी घूमने की है तो ठीक है, चलो तैयारी कर लो।" बाघा बहुत प्रसन्न हुआ। उसने सुन्दर सुन्दर कपड़े अपने तथा अपने पिता के लिए तैयार करके बैग में रख लिए। जाकेट, पगड़ी और टोपी इत्यादि रखना भी वह नहीं भूला। पितृपक्ष के एक दिन पहले वे ए.सी. ट्रेन से रवाना हुए। ट्रेन अपनी रफ्तार से चली जा रही थी। बाघा और रागी ने अच्छा खाना खाया और कागज प्लेट आदि कचरेदान में डालकर हाथ मुँह धोया और आराम से सो गए। बीच में रात्रि के समय कौन-कौन से स्टेशन आए, उन्हें यह ज्ञात ही नहीं हो सका।

जब नींद खुली तो गाड़ी कोटा स्टेशन पर खड़ी थी। बाघा ने कहा- ''पिताजी, यह तो राजस्थान आ ही गया। रागी ने कहा- ''हाँ, अब हम यहाँ से सीधे राजस्थान की राजधानी जयपुर ही चलेंगे। वहाँ की सभा में मुझे उद्‌बोधन देना है। पितृपक्ष के आयोजनों में मनुष्यों की मानसिकता पर आया बदलाव पर परिचर्चा होनी है। किन्तु बाघा तुम्हें भी इस आयोजन में कुछ न कुछ भागीदारी अवश्य लेनी चाहिए।" बाघा बोला-"हाँ, मैं भी यही सोच रहा था। मैं इस परिचर्चा में अवश्य भाग लूँगा। मैं थोड़ी तैयारी कर लेता हूँ।" बाघा ने अपनी डायरी निकाली और लिखने लगा- 'पितृ पक्ष में काग महत्ता'। एक छोटी सी परिचर्चा पिता-पुत्र ने रेल में ही कर ली।

गाड़ी की छुक-छुक जयपुर में आकर रुकी। बाघा और रागी जैसे ही अपना सामान लेकर प्लेटफार्म पर उतरे, वैसे ही जयपुर के 'काँव-काँव कागाध्यक्ष' अपनी टीम के साथ आ पहुँचे और फूलमाला के साथ बाघा और रागी का स्वागत-सम्मान कर उन्हें गंतव्य स्थान की ओर ले गए। बाघा पुलकित था राजस्थान की संस्कृति, स्वागत पर। सभा स्थल पर रुकने की अच्छी व्यवस्था थी। वहाँ पूरे देश के सभी प्रांतों

के कागाध्यक्ष पधारे हुए थे। सभी से मुलाकात करते हुए रागी और बाघा ने स्नान-ध्यान किया। फिर हल्के-फुल्के नाश्ते के बाद सभी ने जयपुर भ्रमण की बात रखी। काँव-काँव जी बोले- "क्यों नहीं, आप लोग प्रान्त-प्रान्त से पधारे

हैं। यह भ्रमण व्यवस्था तो हमने पहले से ही कर रखी है। सभी काग मण्डली निकल पड़ी जयपुर का किला देखने। राजा जयचंद की वीरता की कहानी कहता यह किला राजस्थान की संस्कृति और समृद्धि एवं युद्ध कौशल से भी परिचित करा रहा था। अब वाहन हवा महल की ओर मुड़ चला। बाघा

सोच रहा था, अभी तक तो सुना था 'हवा महल' का नाम। क्या वह वाकई में हवा में बना है? हवा महल देखने के बाद बड़ा आश्चर्य हुआ। अरे, यह तो केवल दीवार में बना है इतना ऊँचा, इतने सुन्दर झरोखों वाला गुलाबी महल! उसे भारतीय कारीगरों के हस्त कौशल पर गर्व होने लगा। बाघा ने पूछा- "अरे! यह तो बताइये जयपुर को गुलाबी शहर क्यों कहते हैं?" काँव काँव जी ने हँसते हुए बताया- "यह पूरा बाजार, किला, हवा महल सभी गुलाबी रंग के दृष्टि गोचर हो रहे हैं। राजा जयचंद ने सभी को गुलाबी रंग से बनवाया है इसलिए इसे पिंक सिटी यानि गुलाबी शहर कहते हैं।" वहाँ के बाजार की रौनक तो देखते ही बनती थी। घूमते-घूमते सभी थक चुके थे। काँव काँव जी ने कहा- "आइये, आज तो पूरे शहर में कई जगह जलपान की व्यवस्था है।" महाराज चौक पर जैसे ही सभी काग उतरे, देखते ही देखते विभिन्न थाल सज गए। व्यंजनों की खुशबू से बाघा के मुँह में पानी आने लगा। सारे काग समवेत स्वरों में काँव-काँव की धुन में मंत्रोच्चारण के साथ भोजन करने लगे। दाल-बाटी, चूरमा के लड्डू, बाफले, तरह-तरह के मीठे व्यंजन सभी ने छककर खाये। सकोरों में रखा स्वच्छ जल का पान किया। बाघा ने अपनी स्वच्छ जाकेट से रूमाल निकालकर मुँह पोंछा। सभी काग चमकीले वस्त्रों में सजे बहुत सुन्दर लग रहे थे। पुन: बापू बाजार, नेहरू बाजार घूमते हुए सभी ने काँच जड़ित वस्त्र इत्यादि खरीदे और फिर काँव-काँव जी सभी अतिथियों को सभा स्थल की ओर ले चले।

सभा स्थल जगमगा रहा था। वहाँ हल्का फुल्का नाश्ता और जूस इत्यादि पीने के बाद सभा आरंभ हुई। सभी ने उद्‌बोधन में पितृपक्ष में होने वाले आयोजन पर गद्य-पद्य में चर्चा की। बाघा ने 'पितृ पक्ष में काग महत्ता' पर बहुत अच्छी कविता पढ़ी, ''पितृ पक्ष में हम कागों की, होती शान निराली/पूर्वज समझे जाते हैं हम, भोजन मिलता भर-भर थाली'' जिसे बेहद सराहना मिली। सभा समाप्ति पर सभी को स्मृति चिन्ह प्रदान किये गए और फिर भोजन की व्यवस्था की गई। भोजन के तो ठाठ ही निराले थे। चौकी आसन पर सभी को पंख पैर धुलाकर बिठाया गया। **केसरिया बालम पधारो म्हारे देस...** की धुन गूँज रही थी, सभी को सुन्दर पगड़ी काँव काँव जी की ओर से पहनाई गई। दाल-बाटी, बाफले, चूरमा के लड्डू, जलेबी, खीर, मालपुआ, गट्टे की साग, सेंग्रे की साग। आह! इतने सारे सुस्वादु व्यंजन, बाटियों में खूब सारा घी उड़ेल कर परसा जा रहा था, वह भी विनम्र आग्रह के साथ। बाघा तो गदगद हुआ जा रहा था। क्या खाऊँ- क्या छोड़ूँ? "अरे वाह,

बढ़िया छाछ भी है।" वह अपनी पगड़ी बार-बार संभाल रहा था। रागी अपने बेटे को प्रसन्न होते देख रहा था। भोजन स्थल की सजावट देखते ही बन रही थी जो राजस्थानी शैली से निखरी हुई थी। पानी का पात्र भी विशिष्ट आकृति का था। चटपटे सुस्वादु भोजन के उपरांत सभी ने मिश्री खाई। सभी पगड़ी बांधे हुए काग अतिथियों को बाहर खटिया पर बैठाया गया। वहाँ **कालबेलिया नृत्य** चल रहा था। कालबेलिया नर्तकी सभी कागों को अपने साथ नृत्य करवाने लगीं। नृत्य पर थिरकते पैर और कागों से भरे इस नृत्य मंच पर बैठे काँव-काँव जी प्रसन्न हो रहे थे और खूब फोटोग्राफी भी कर रहे थे। नर्तकी कभी काँच पर, कभी परात पर पैर रख सिर पर दस घड़े रखकर नृत्य कर रही थी। बाघा तो अनायास ही नर्तकी के कंधे पर जाकर बैठ गया। यह देखकर सभी ताली बजाने लगे। नर्तकी ने भी बाघा को चूम लिया। एक जोरदार ठहाका लगा, बाघा शरमाकर रागी के पास आ गया। फिर सब जादू देखने लगे। खाली रूमाल को झटका कर उसमें से कबूतर जैसे निकाला जादूगर ने? यह सोचकर तो बाघा रागी से प्रश्नों की झड़ी लगाने लगा। रागी ने कहा- "अभी तो तू सिर्फ आनंद ले।" तभी बाघा ने देखा सजे-धजे ऊँट पर लोग सवारी कर रहे हैं। उसने रागी से कहा-"पिताजी! हमें गाय, बैल, भैंस पर सवारी की है किन्तु, ऊँट की सवारी तो कभी नहीं की। मैं भी ऊँट की सवारी करूँगा।" बाघा के साथ सारे काग भी ऊँट की सवारी के लिए चल पड़े। ऊँट बैठा जुगाली कर रहा था जैसे ही काग सवारी के लिए आये, वह बलबल-बलबल करने लगा। बाघा पहले तो डर गया फिर हिम्मत करके उस पर बैठ गया। ऊँट अपनी कमर हिलाते हुए जैसे ही खड़ा हुआ, सारे काग डर के मारे चिल्लाने लगे। सबने ऊँट की लगाम पकड़ ली। ऊँट मस्ती में चलने लगा। फिर उसने दौड़ना शुरु कर दिया। सारे काग मजा ले रहे थे। ऊँट ने सारी नखराली ढाणी का एक चक्कर लगाया और फिर बैठ गया। सारे काग नीचे उतर आये। बाघा बोला, "हाय राम! मेरी कमर की तो कचूमर ही निकाल दी ऊँट ने। सारी हड्डी-पसली एक हो गई।" फिर भी झूमते-झूमते गाते विश्राम स्थल पर आ गए और सो गए।

सवेरे सभी का आमंत्रण हल्दी घाटी पर महाराणा प्रताप संग्रहालय में था। महाराणा प्रताप का नाम लेते ही उनके घोड़े चेतक की याद आ गई। हल्दी घाटी के युद्ध की चर्चा आपस में करके सभी रोमांचित हो रहे थे। सुबह-सुबह सब तैयार हुए। बाघा और रागी ने आज विशेष पीले रंग की पोषाक पहनी थी। जिसमें उनका काला रंग बेहद सुन्दर लग रहा था। राजस्थानी पगड़ी तो गजब ढा रही थी। सभी सम्मान की फूलों की माला पहने हुए हल्दी घाटी पहुँचे। महाराणा प्रताप संग्रहालय में श्री मोहन माली जी के आतिथ्य के क्या कहने। उनके सत्कार ने तो राजस्थान की संस्कृति को महिमा मंडित कर दिया।

संग्रहालय में राणा प्रताप और युद्ध स्थल तथा स्वामी भक्त भामा शाह के रंगीन चित्र अंकित थे। हल्दी घाटी की पीली माटी को प्रणाम करके सभी रक्त तलैया पहुँचे जहाँ वीरों ने अपने देश की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए थे। अनगिनत सैनिकों का रक्त इस स्थान पर बहा और पानी बरसने के कारण इस स्थान में रक्त का तालाब भर गया था तब से इस स्थान का नाम रक्त तलैया पड़ गया। यह वृत्तांत सुनकर सभी की आँखों में आँसू छलक पड़े। युद्ध में राणा प्रताप को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने के बाद चेतक ने अपने प्राण त्यागे थे। राणा प्रताप अपने घोड़े चेतक को बहुत प्यार करते थे 'चेतक स्मारक' इस बात की याद दिलाता है। बाघा बोला- ''काश! मैं भी चेतक की तरह घोड़ा होता।" रागी बोला- ''हम जो हैं, उस योनी में रहकर भी अच्छे कार्य करें, आखिर कागभुसुंडी जी हमारे पूर्वज ही थे जिनका नाम रामायण में सम्मान के साथ लिया जाता है। अपने कर्मों से सभी जीव महान बनते हैं।" बाघा ने स्वीकारोक्ति में सिर हिलाया। पुन: सभी उदयपुर के लिए रवाना हुए।

पितृ पक्ष का पाँचवां दिन प्रारम्भ हो चुका था। रास्ते में सभी ने हल्दीघाटी रिसोर्ट में इत्र और गुलाब का अर्क खरीदा। सभी ने इत्र लगाया, पूरा वातावरण महक उठा। तभी काँव काँव जी बोले- ''ठहरिए, यहाँ सभी के लिए भोजन की व्यवस्था है।" सभी काग मंत्रोच्चारण करने लगे। "भाई वाह! क्या बात है राजस्थान के भोजन की!" रागी बोला- ''हाँ बाघा, अभी तो झीलों की नगरी उदयपुर घूमना है।" राजा उदयसिंह की नगरी उदयपुर में इतनी बड़ी-बड़ी झीलों में नौका विहार का अलग ही आनंद था। सारे सजे-धजे सुन्दर पोषाक में नौका पर सवार कागों से लहरें किलोल करती हुई मंत्र मुग्ध कर रही थीं। बाघा गाने लगा- ''झीलों के सीने में ठंडी ठंडी आग है'' सभी हँसने लगे। झीलों के बीचों बीच एक बड़े से होटल में सभी ने ठंडा पेय पिया। इस

होटल में कई अभिनेत्रियों के विवाह सम्पन्न हुए हैं। यह सुनकर बाघा बोला- ''मेरा विवाह भी पिता जी यहीं कराइए।'' काँव काँव जी बोले- ''तो फिर कोई राजस्थानी कागली पसंद कर लो।" सभी कहकहा लगा कर हँसने लगे। सभी ने सिटी पैलेस, गुलाब बाड़ी, सुखाड़िया सर्किल, आमेर का किला आदि की सैर की। आमेर के किले में महाभारत धारावाहिक की शूटिंग चल रही थी। भीम अपनी गदा घूमा रहा था। बाघा वहाँ भीम के कन्धे पर जा बैठा। सब चिल्लाने लगे- "मारे जाओगे...।"पर, बाघा ने ऊँची उड़ान भर दी, भीम गदा घुमाता ही रह गया।

चित्तौड़गढ़ में चेतक पर सवार राणा प्रताप की मूर्ति देखकर मन प्रसन्न हो गया। उदयपुर में ही तीन चार दिन घूमने के पश्चात सभी ने एक दिन विश्राम किया। और फिर काँव काँव जी बोले- "अब नाथद्वारा चलकर श्रीनाथजी के दर्शन भी कर लेना चाहिए।" सभी ने प्रसन्न मुद्रा में हामी भरी दी। श्रीनाथ जी भगवान के भक्तों की नगरी में भक्तों की इतनी भीड़ देखकर बाघा बोला- "इस तरह तो दर्शन में बहुत देर लग जाएगी। मैं तो उड़कर धक्का देते हुए सबसे पहले भगवान के दर्शन करके आराम करूँगा।" रागी बोला- "बाघा, कहीं भी जाओ अनुशासन में रहो। देखो, सब कतारबद्ध खड़े हैं। थोड़े-थोड़े लोग दर्शन के लिए छोड़े जाते हैं। जिससे कोई दुर्घटना नहीं होती।" सभी को उत्सुकता थी भगवान के दर्शन की। भगवान के मुकुट में हीरे जड़े हुए थे। बाघा कहने लगा। "काश! एक हीरा मेरी पगड़ी में भी लग जाता। मैं जाता हूँ और अपनी नुकीली चोंच से हीरा निकालकर ले आता हूँ।" रागी ने कहा- "अपनी इन्हीं आदतों के कारण भगवान श्री राम ने हमें श्राप दिया था और हमारी आँख पर तीर चलाया था इसलिए हमें एक ही आँख से दिखाई देता है, इसलिए अपनी आदतें सुधारो।" बाघा को अपने मजाक पर थोड़ा धक्का लगा। फिर वह बोला- "हाँ, पर यह भी तो कहते हैं, काग के भाग बड़े सजनी, हरि हाथ सों ले गयो माखन रोटी सभी एक दूसरे का मुंह देखने लगे- बाघा है तो बुद्धिमान। नाथद्वारा के दर्शन कर सभी अपने को धन्य मानने लगे। सभी ने विशेष प्रकार का भोग बूंदी का बड़ा सा लड्डू और शक्कर पगी बड़ी सी गोल मिठाई का भोग खरीदा, खाया और चल पड़े मस्ती में भजन गाते हुए 'गोविन्द बोलो हरि गोपाल बोलो'।

पितृ पक्ष महोत्सव के सोलह दिन कैसे गुजरे, पता ही न चला। अंतिम दिन एक काव्य गोष्ठी का आयोजन था। सभी ने एक दूसरे को भावभीनी विदाई दी, सभी के पते ठिकाने लिखे ताकि पत्र इत्यादि के माध्यम से विचारों का आदान प्रदान होता रहे। काँव काँव जी ने सभी को शाल, श्रीफल देकर सम्मानपूर्वक विदा किया। सभी अपने-अपने गंतव्य स्थान को रवाना हो गए।

रागी और बाघा रात में जयपुर-जबलपुर एक्सप्रेस ट्रेन से कटनी के लिए रवाना हुए। जब उनकी नींद खुली तो बाघा ने पिता जी से कहा- ''अब हम मध्यप्रदेश में आ गए हैं। यहाँ रास्ते में मन्दसौर भी है, सुना है वहाँ पशुपतिनाथ का प्रसिद्ध मंदिर है। क्या हम वहाँ नहीं चल सकते?" रागी ने कहा- ''हाँ, अवश्य चलेंगे।" बाघा तो जैसे बल्लियों उछल पड़ा। मंदसौर पहुँच कर मंदिर प्रांगण में लगे नल पर दोनों ने पैर पर धोए। बाघा ने तो फटाफट स्नान कर अच्छी तरह चोंच भी धो ली क्योंकि कुछ न कुछ वह खाता ही रहता था। फिर पवित्र तन-मन से रागी और बाघा ने वहाँ अष्टमुखी पशुपतिनाथ यानी भगवान शंकर के दर्शन कर प्रसाद ग्रहण कर अपने गंतव्य की ओर लौट चले।

यात्रा अंतिम पड़ाव पर थी। गाड़ी मुड़वारा स्टेशन पर रुकी। बाघा बोला- ''अब तो गाड़ी में बैठे-बैठे पंख अकड़ने लगे हैं, उड़ान भरने को जी चाहता है।" रागी बोला- "चुपचाप बैठे रहो, सामान लेकर उड़ना संभव नहीं है। कटनी आने ही वाला है और अब तो पितृ पक्ष भी निकल गया वैसे भी कोई पूछने वाला नहीं है। अब तो मेहनत करके यहाँ वहाँ उड़कर भोजन की तलाश करना ही पड़ेगी। फिर जी भरकर उड़ना। हम लोगों को तो हिन्दू परम्परा के अनुसार पितृ पक्ष में पूर्वज समझ कर खूब सम्मान करते हैं। पहले तो किसी की मुंडेर पर यदि हम सबेरे सबेरे बोलते थे तो शुभ समझते थे कि कोई आने वाला है और खुश हो जाते थे पर अब तो भगाने लगते हैं कि किसी के आने का समाचार ऐसी मंहगाई में दे रहा है, जाओ भागो।" कहते-सुनते कटनी स्टेशन आ गया। बाघा बोला- "पिताजी! इतने हँसी खुशी के दिन बिताकर आये हैं। चलिए, सबके अपने अपने दिन होते हैं। अगले पितृ पक्ष में उत्तराखण्ड चलेंगे।" जब कटनी स्टेशन पर राजस्थानी पगड़ी लगाये रागी और बाघा सामान लेकर उतरे तो पूरी काग सभा उनके स्वागत में आई और पूरा स्टेशन काग ध्वनि से गूँज उठा।

- कटनी (म.प्र.)

पिताजी और पर्यायवाची

कहानी

श्याम नारायण श्रीवास्तव

जलज अपनी कक्षा के उन छात्रों में से है जिसका परिणाम हमेशा अच्छा रहता है। लेकिन हिन्दी में वह थोड़ा कमजोर है। उसे अपने पाठ का प्रश्न उत्तर तो याद हो जाता है। कठिनाई होती है हिन्दी के व्याकरण में। जिसमें गणित की तरह ठोस अंक मिलते हैं। सही हुआ तो पूरा-पूरा, नहीं तो सबका शून्य। इसी के साथ मुहावरों का अर्थ याद करना, ये सब उसके लिए थोड़ा कठिन है। पर्यायवाची तो रट-रट कर वह हार गया। लेकिन याद ही नहीं रहता है। वह अभी तीसरी कक्षा में है।

गणित, अंग्रेजी यहाँ तक कि सामान्य ज्ञान भी उसे याद हो जाता है। पर जाने क्या बात है! हिन्दी का व्याकरण ही उसके पल्ले नहीं पड़ता। एक दिन उसकी कक्षा में हिन्दी व्याकरण का ही मासिक टेस्ट होने वाला था। वह बहुत परेशान था।

उसके पिताजी के कार्यालय से लौटते ही जाकर कहा- ''पिताजी! आप पर्यायवाची शब्द कैसे याद रखते थे?''

''पर्यायवाची शब्द, ये तो बहुत आसान है।'' पिताजी ने कहा तो जलज चौंका।

''क्या पर्यायवाची शब्द याद करना बहुत आसान है?''

''हाँ''

''देखो पर्यायवाची किसे कहते हैं जानते हो?''

''जी पिताजी! किसी भी वस्तु को जितने भी नाम से जाना जाता है वे सारे शब्द उसके पर्यायवाची होते हैं।''

''एक दम

सही, अब पहले तुम बताओ, किन-किन शब्दों के पर्यायवाची याद करने हैं?''

''मुझे जल, कमल, सूर्य, समुद्र, बादल के पर्यायवाची याद हो गए तो मुझे पूरे अंक प्राप्त हो जाएंगे। इन्हीं में कोई तीन मासिक परीक्षा में आ सकते हैं।''

''ठीक है आधे घण्टे बाद रफ कापी लेकर बैठते हैं।''

ऐसा कहकर उसके पिताजी ने अपने कपड़े बदले और तब तक माँ ने चाय और नमकीन लाकर रख दिया। चाय लेने के बाद पिताजी ने जलज को बुलाया। जलज तुरंत अपनी रफ कापी लेकर पहुँच गया।

''आओ! मैं तुम्हें बताता हूँ कि पर्यायवाची शब्द याद करने का सही तरीका क्या है। मुझे मेरे अध्यापक ने जिस तरह बताया था। वह आज भी याद है। तुम्हें भी बताता हूँ। सबसे पहले जल से ही शुरु करते हैं। अच्छा जल का मतलब क्या होता है?''

''जल का मतलब पानी।'' जलज ने उत्तर दिया।

''बहुत अच्छा! मतलब जल का एक पर्यायवाची पानी भी होता है, ठीक है।''

''जी पिताजी!''

"मैं तुम्हें केवल पानी का पर्यायवाची बताऊँगा और बादल, कमल, समुद्र का अपने आप ही याद हो जाएगा।"

"कैसे पिताजी?"

''देखो पानी का पर्यायवाची होता है जल, नीर, वारि, अम्बू, तोय। ये तुम्हें याद करना पड़ेगा।''

अब यदि पानी के पर्यायवाची में 'द' जोड़ दो, तो जो भी शब्द बनेंगे वे सभी बादल के पर्यायवाची में 'ज' जोड़ दो तो कमल का पर्यायवाची हो जाएगा, जैसे...''

''ठीक है पिताजी! रुकिए, इसे मैं लिखता हूँ।''

उसने रफ कापी में लिखा, जलज, नीरज, वारिज, अम्बुजा, तोयज।

''वाह! बहुत आसान है पिताजी और इसमें तो मेरा नाम भी आ गया।''

''हाँ जलज का मतलब भी कमल होता है।''

''अच्छा! ये तो मुझे पता ही नहीं था।''

''हाँ, जलज का मतलब तो कमल होता ही है, तुम्हारा साथी अरविन्द जो है उसके भी नाम का अर्थ कमल होता है।''

''लेकिन पिताजी उसके नाम में तो 'ज' नहीं जुड़ा है।''

''हाँ ठीक है। देखो ये आवश्यक नहीं है कि कमल के सारे पर्यायवाची शब्द के अंत में 'ज' जुड़ा हो। मैंने तो यह बताया कि यदि पानी के पर्यायबाची में 'ज' जोड़ दो तो कमल का पर्यायवाची शब्द हो जाएगा।

''ओह... ठीक है, ठीक है पिताजी, मैं समझ गया। अब आगे बताइए।''

''हाँ, अब पानी के ही पर्यायवाची में 'धि' या 'निधि' जोड़ देने से समुद्र का पर्यायबाची हो जाएगा।''

''मतलब जैसे जलधि।'' अचानक जलज बोला।

तो पिताजी ने कहा, ''हाँ बिलकुल सही कर रहे हो, जलधि, वारिधि, नीरनिधि आदि समुद्र के पर्यायवाची शब्द हैं।''

''जी पिताजी!''

''चलो अब तक पानी, बादल, कमल, समुद्र का याद हो गया।''

''जी पिताजी!''

''अब बचा सूर्य का। इसके लिए तुम अपने दादा (बड़े भैया) लोगों का नाम याद लो बस।''

''कैसे?''

''दिनकर, दिवाकर, अंशुमान, आदित्य इन सबका अर्थ है सूर्य, यानी ये सूर्य के पर्यायवाची शब्द हैं।

''सही में पिताजी।''

''हाँ- हाँ एकदम सही।''

फिर क्या था, जलज ने ये सब खुद तो याद कर ही लिया। अपने साथी अरविन्द को भी बता दिया। इस बार मासिक परीक्षा में जलज के पूरे अंक आये तो वह दौड़ कर पिताजी से लिपट गया।

''पिताजी, आपने पर्यायवाची शब्द याद करने का जो तरीका बताया है, वह तो मुझे कभी भी नहीं भूलेगा।

- रायगढ़ (छ.ग.)

आपका खाना कितना पानी पीता है ?

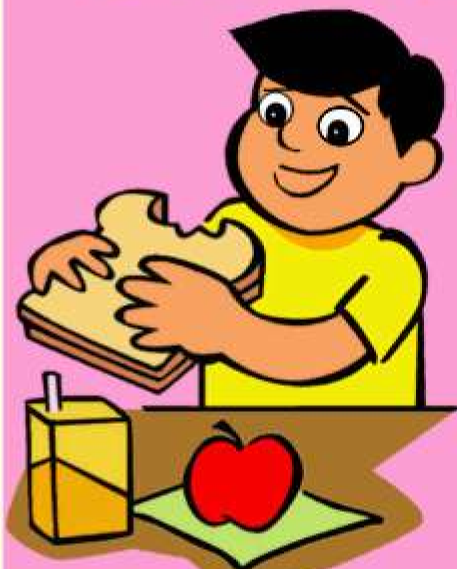

हो सकता है आपको हमारी बात अजीब लगे पर सच तो ये है कि जो भी चीज आप खाते हैं उसके आप तक पहुंचने से पहले उसके भरण पोषण पर पानी की एक खास मात्रा खर्च हो चुकी है तो अगली बार सेब खाते समय ध्यान रखिएगा कि उसका बीज बोने से लेकर सेब के आपकी मेज तक पहुंचने में 70 लीटर पानी खर्च हुआ है। कागज से लेकर मटन तक और कॉफी से लेकर कॉटन तक, सभी के मामले में शुरू से अंत तक इतना पानी खर्च होता है जिसकी तो आपने कल्पना भी नहीं की होगी.....

2025 में क्या होंगे हालात?

संयुक्त राष्ट्र के मुताबिक दुनिया में प्रति व्यक्ति जलापूर्ति अगले दो दशक में एक-तिहाई कम हो जाएगी। सबसे ज्यादा दबाव अफ्रीका और मध्य-पूर्व पर होगा, जहां आबादी तेजी से बढ़ रही है और नदियां तेजी से सूख रही हैं।

हमारी हालत बदतर :

दुनिया में सबसे खराब पानी इस्तेमाल करने वाले 5 देशों में भारत का तीसरा स्थान है।

अब पानी के खर्च का पूरा हिसाब जानने के लिए ये भी गौर फरमाएं कि इन चीजों पर कितना पानी खर्चा जा चुका है..

ब्रेड का एक स्लाइस - 40 लीटर पानी
एक सेब-70 लीटर पानी
एक कप दूध-208 लीटर पानी
आधा किलो सोयाबीन-818 लीटर पानी
कागज (1 शीट)-10 लीटर पानी
एक कप चाय-30 लीटर पानी
आधा किलो चावल-1700 लीटर पानी
आधा किलो चिकन-1,400 लीटर पानी
आधा किलो आलू-450 लीटर पानी
एक कप कॉफी-140 लीटर पानी
आधा किलो भुट्टा-409 लीटर पानी
एक लीटर बीयर-686 लीटर पानी
आधा किलो चॉकलेट-12,000 लीटर पानी
आधा किलो मटन-480 लीटर पानी
आधा किलो बाजरा-2500 लीटर पानी

मीठे पानी की मारामारी : दुनिया में कुल पानी का सिर्फ 2.5 फीसदी हिस्सा ही मीठा पानी है। इसमें से भी केवल 1 फीसदी पानी इस्तेमाल के लिए उपलब्ध है।

शिक्षक दिवस

कविता

डॉ. विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद'

आज शिक्षक दिवस आया।
गुरू हमें सद्ज्ञान देते।
हर अविद्या तिमिर लेते।।
है हमें करते सुशिक्षित,
शिष्य प्रिय हमको बनाया।
आज शिक्षक दिवस आया।।
यह हमारी भावना है।
यह हमारी कामना है।।
गुरु हमारे मान पाये,
है जिन्होंने जग जगाया।
आज शिक्षक दिवस आया।।
कोटि-कोटि प्रणाम उनको।
शत नमन अभिराम उनको।।
मिल सके उनको प्रतिष्ठा,
भाव यह उर में समाया।
आज शिक्षक दिवस आया।।
पर्व होगा सफल अपना।
पूर्ण होगा सुखद सपना।।
धन्य हैं आदर्श शिक्षक,
पथ जिन्होंने शुचि दिखाया।
आज शिक्षक दिवस आया।।

- लखनऊ (उ.प्र.)

चित्र बनाओ • राजेश गुजर

बच्चो, तितली का चित्र आसानी

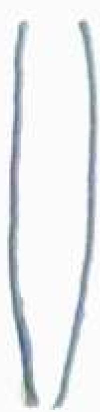

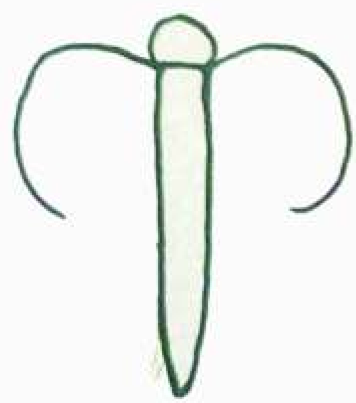

(पं. दीनदयाल उपाध्याय जयंती : 25 सितम्बर)

कभी घमण्ड न करना

कविता

डॉ. वेदमित्र शुक्ल 'मयंक'

राजा भैया,किशन कन्हैया
अन्नू दीदी आयें,
खेल-खेल में हिल-मिल करके
सुन्दर सभा सजायें।

अन्नू दीदी बनी शिक्षिका
शेष छात्र बन धाये,
और भैया जी दीना बनकर
थोड़ा सा अकड़ाये।

समझदार बालक दीना सा
मुख्यपात्र बन करके,
भैया जी तो फूल गये हैं
अकड़े बन-ठन करके।

दीदी बोली भैया से
यदि सच में दीना बनना,
पढ़ो लिखो मेहनत से
पर कभी घमंड न करना।

भैया जी तो समझ गये हैं
आओ हम भी जानें,
दीना ही पं. दीनदयाल थे
दुनिया जिनको माने।

- नईदिल्ली

से बनाओ, रंग भरो।

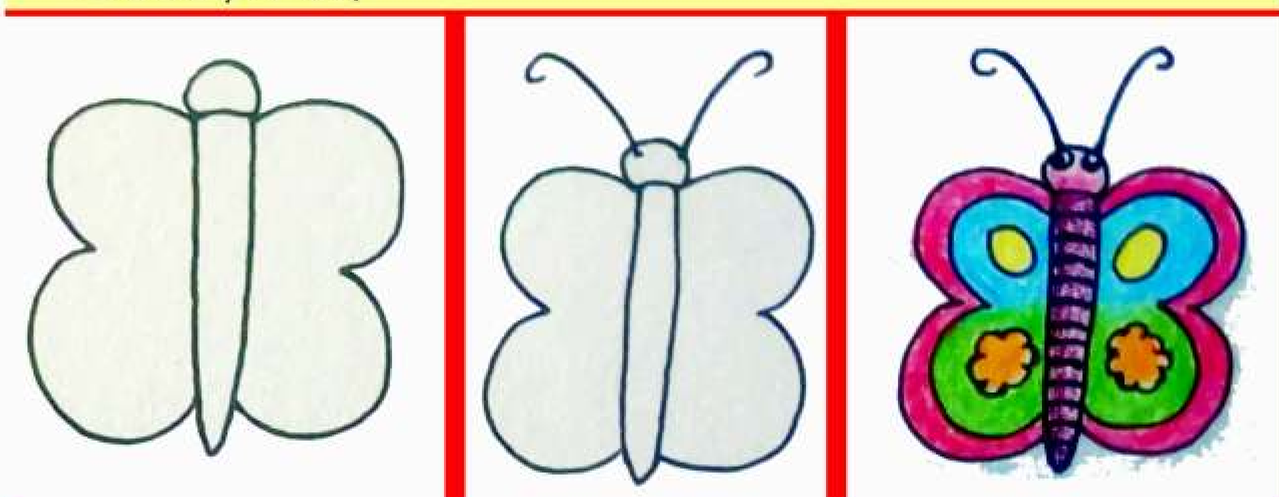

|| 27 सितम्बर : राष्ट्रीय नदी दिवस ||

भारतीय नदियों का नामकरण

आलेख

नरेन्द्र देवांगन

भारत कृषि प्रधान देश है और कृषि का आधार है नदियाँ। हमारी सभ्यता का उदय नदियों के किनारे ही हुआ है। इन्हीं के कारण हमारी भारत भूमि `शस्यश्यामला` बन पाई है। तट के तीर्थों के कारण नदियों को पावन माना जाता है। प्राय: सभी धार्मिक एवं पौराणिक ग्रंथों में इनकी विपुल महिमा गायी गई है।

`नदी` शब्द `नद्` धातु से बना है, जिसका अर्थ है आवाज करना। बहते समय कल-कल की ध्वनि होने के कारण उसे `नदी` की संज्ञा दी गई है। नदियों के नाम अर्थयुक्त और सुंदर हैं, जिन पर देवभाषा संस्कृत की छाप स्पष्ट है। ये नाम प्राचीन काल में मनीषियों या भूगोलशास्त्रियों की बुद्धिमत्ता के द्योतक हैं। हमारे देश की प्रमुख नदियों के नाम किस प्रकार पड़े हैं, इसका संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत है।

गंगा - यह हिमाचल पर्वत में गंगोत्री से निकलती है तथा 2427 किलोमीटर की यात्रा करके बंगाल की खाड़ी में गिरती है। `गम् धातु में` औणादिक `गन्` प्रत्यय लग कर `गंगा` शब्द की निष्पत्ति होती है। `श्रीगंगामाहात्म्य` के अनुसार गा (पृथ्वी) में आ कर पुन: अपने स्थान को लौटने के कारण इसका नाम गंगा पड़ा है। यह नदी अनेक नामों से जानी जाती है, जैसे भागीरथी, जाह्नवी, विष्णुपदी, त्रिपथगा आदि।

`वायुपुराण` के अनुसार राजा भागीरथ द्वारा अपने पूर्वजों को तारने के लिए घोर तपस्या करके गंगा को धरती पर लाने के कारण भागीरथी नाम पड़ा।

`जाह्नवी` नाम के बारे में वाल्मीकि रामायण में बताया गया है कि राजा भगीरथ का अनुसरण करती हुई गंगा नदी जब जह्नु ऋषि की यज्ञभूमि बहा ले गई, तब ऋषि ने क्रोधित हो उसकी धारा का पी लिया। भागीरथ के प्रार्थना करने पर उन्होंने उसे अपने कान से बाहर निकाला। इस कारण उसे `जाह्नवी` कहा जाने लगा।

विश्वास किया जाता है कि स्वर्ण, मर्त्य तथा पाताल, इन तीन लोकों में गंगा के प्रवाह हैं। इसी बात को लक्ष्य कर इसे `त्रिपथगा` की संज्ञा दी गई है। यह भी कहा जाता है कि यह नदी भगवान विष्णु के पादपंकज के अंगूठे से निकली है। इस कारण पुराणों

में इसका उल्लेख 'विष्णुपदी' नाम से हुआ है।

यमुना - यह यमुनोत्री से निकल कर प्रयाग में गंगा में मिलती है। यमुनोत्री से निकलने तथा यम की बहन मानने के कारण इसे यमुना कहते हैं। कलिंद पर्वत से प्रवाहित होने के कारण इसे कालिंदी भी कहा जाता है।

सरस्वती - इसका उद्‌गम स्थल प्लक्ष-प्रस्रवण माना जाता है। वहाँ से बहती हुई यह पटियाला में 'विनशन' नामक स्थान में बालू में लुप्त हो जाती है। 'सरस' यानि जिसमें जल हो तथा 'वती' यानी 'वाली' अर्थात 'जलवाली' इस अर्थ में इसका नामकरण हुआ है। इसका अंत अप्रकट होने के कारण इसे 'अंत:सलिला' की संज्ञा भी दी गई है।

सिंधु - यह तिब्बत से निकलकर अरब सागर में गिरती है। इसकी कुल लंबाई 2735 किलोमीटर है। सिंधु देश की एक बड़ी नदी होने के कारण इसका नाम भी सिंधु पड़ गया। सिंधु का अर्थ 'समुद्र' ही नहीं, 'सामान्य नदी' भी होता है।

गोदावरी - यह त्र्यंबकेश्वर के समीप ब्रम्हगिरि से समुत्पन्न होती है तथा बंगाल की खाड़ी में गिरती है। 'हलायुधकोश:' में इसकी व्याख्या इस प्रकार दी गई है, 'गां जलं स्वर्गं वा ददातीति गोदा:।' अर्थात पृथ्वी पर जल देने वाली या (स्नान करने से) स्वर्ग दिलाने वाली गोदावरी। कुछ विद्वानों के अनुसार इसका नामकरण तेलुगुभाषी शब्द 'गोदे' से हुआ है, जिसका अर्थ 'मर्यादा' होता है।

ब्रम्हपुत्र - यह एक नद है, जो तिब्बत में मानसरोवर के ब्रम्हकुंड से नि:सृत होता है। इसकी कुल लंबाई 2703 किलोमीटर है। 'ब्रम्हकुंड' से निकलने के कारण इसका नाम 'ब्रम्हकुंड' पड़ा। इसका प्राचीन नाम 'लोहित' या 'लौहित्य' है। इस नाम के बारे में कहा जाता है कि परशुराम ने कुठार में लगे क्षत्रियों के रक्त के धब्बे धो कर इसमें स्नान किया था, इससे इसका नाम 'लोहित' पड़ गया।

कृष्णा - जैसा कि नाम से स्पष्ट है, कृष्णवर्ण होने के कारण इसका नाम कृष्णा पड़ा है। यह नदी महाबलेश्वर के गोमुख द्वार से उदित होती है और सतारा के पास उससे वेणा (येन्ना) नदी आ कर मिलती है। इससे इसका संयुक्त नाम 'कृष्णावेणा' हो गया।

कावेरी - यह नदी पश्चिमी घाट में ब्रम्हगिरि से निकल कर बंगाल की खाड़ी में गिरती है। कावेरी की व्युत्पत्ति तमिल शब्द 'काविरि' से मानी जाती है, जिसका अर्थ 'उपवनों का विस्तार करने वाली' होता है।

नर्मदा - यह अमरकंटक के एक कुंड से निकलकर गहन पर्वतों एवं जंगलों से होती हुई भड़ूच के पास खंभात की खाड़ी में गिरती है। 'हलायुधकोश:' के अनुसार 'नर्मं ददातीति नर्मदा' (सुख शांति देने वाली नदी नर्मदा है)।

कालिदास के 'मेघदूत' में इसका 'रेवा' नाम से उल्लेख है। रेवा संस्कृत के 'रेव' शब्द से बना है, जिसका अर्थ 'कूदना' होता है। पहाड़ी चट्टानों से नीचे गिरने के कारण इसका नाम रेवा पड़ा है।

भरपूर पानी है। जो कई गाँवों को खींचती है। वाल्मीकीय रामायण के अनुसार इस नदी के किनारे गायों का एक बड़ा झुंड विचरण करता था, इस कारण इसक नाम 'गोमती' पड़ा है।

सतलज- इसका मूल नाम 'शतद्रु' है। कहा जाता है कि वसिष्ठ मुनि के सौ पुत्र विश्वामित्र द्वारा मारे जाने पर वे गौरी नदी में डूबने चले। गौरी दूर भाग कर सैकड़ों धाराओं में परिणत हो गई। इससे उसका नाम 'शतद्रु' हो गया, जो बाद में 'सतलुज' हो गया।

ताप्ती - मध्यप्रदेश के मुलतापी (मुलताई) शहर की एक झील से निकलकर सतपुड़ा की घाटियों को काटकर बहती हुई यह नदी अरब सागर में विसर्जित होती है। पुराणों में इसका उल्लेख 'तापी', 'तापिका', 'तापिनी' आदि नामों से हुआ है। 'मत्स्य पुराण' के अनुसार सूर्य ने अपने ताप से बचाने के लिए इस नदी को उत्पन्न किया था, इस कारण इसका नाम 'ताप्ती' पड़ा।

सरयू - इसका निकास 'ब्रम्हासर' से होने के कारण इसका नाम 'सरयू' या 'शरयू' पड़ा है।

महानदी - यह अमरकंटक श्रेणी के दक्षिण में रायपुर जिले के सिहावा ग्राम के एक पोखर से निकलती है। महानदी का शब्दकोशगत अर्थ 'समुद्र तक जाने वाली नदी' है, किन्तु 'बड़ी नदी' के अर्थ में इसे महानदी की संज्ञा दी गई है। तत्कालीन दक्षिण कोसल तथा ओडिशा की सबसे बड़ी नदी होने के कारण ही इस नदी को महानदी नाम से अभिहित किया गया।

गोमती - 'शब्दकल्पद्रुम' में इसके नाम की व्युत्पत्ति के बारे में कहा गया है, 'बहवो गावो जलानि सन्त्यमस्यामिति' अर्थात गोमती नदी वह है, जिसमें

व्यास - यह कांगड़ा घाटी के बीच रोहतांग दर्रे के समीपस्थ पीरपंजाल की श्रेणी में व्यासकुंड से निकलती है। कहा जाता है कि व्यास मुनि ने यहाँ की शिलाओं पर बैठ कर वेदों की संहिताएँ बनाई थीं। व्यासकुंड से उदित होने के कारण इसका नाम व्यास पड़ा है।

रावी - इसका मूल नाम 'इरावती' है। 'इरा' सरोवर से निकलने के कारण इसे इरावती कहा जाने लगा, जो बाद में रावी हो गया।

क्षिप्रा - यह नदी पारियात्र (विंध्याचल) से निकलती है, और चंबल से जा मिलती है। शीघ्र बहने के कारण यह क्षिप्रा कहलने लगी, जो बाद में शिप्रा हो गया।

इस प्रकार स्पष्ट है कि ये नाम निष्कारण नहीं रखे गए हैं वरन सार्थक ही हैं। अनेक नदियों के नाम देवताओं या ऋषि-मुनियों से किसी न किसी रूप से संबंधित हैं। फलस्वरूप उन्हें देवत्व प्राप्त हो गया है और अनन्य रूप से उनका संबंध जनभावना के साथ जुड़ गया है।

- खरोरा (छ.ग.)

(संत विनोबा जयंती : 11 सितम्बर)

समाज का रूप

प्रसंग

डॉ. श्याम मनोहर व्यास

भूदान यज्ञ के पुरोधा आचार्य विनोबा भावे अपनी बात बड़े रोचक ढंग से उदाहरण देकर प्रस्तुत करते थे।

एक नगर में उन्होंने सभा के दौरान कहा- ''समाज दो प्रकार का होता है। एक गेहूँ के ढेर जैसा और दूसरा पानी के जैसा। गेहूँ के ढ़ेर में से एक किलो गेहूँ निकाल दिया जाये तो उसमें गड्ढा पड़ जाता है। गेहूँ के दाने अपनी-अपनी जगह बने रहना चाहते हैं कुछ ही दाने ऐसे होते हैं जो परोपकारी होते हैं और गड्ढे को भरने की कोशिश करते हैं।

किन्तु कुँए के पानी में ऐसा नहीं होता। एक बाल्टी पानी उसमें से निकालेंगे तो पानी की बूँदों से वह खाली स्थान वापस भर जाएगा। भले ही पानी की सतह कुछ नीचे गिर जाये। समाज में भी ऐसा ही प्यार होना चाहिए। समाज का दु:ख बाँटने से घटता है गरीबी बाँटने से मिटती है।

ऐसे प्रेरक प्रवचन सुनकर जमींदार लोग तुरंत अपनी अतिरिक्त भूमि का दान कर देते थे।

- उदयपुर (राज.)

उलझ गए!

• देवाशु वत्स

सोनू ने मीतांशी के बारे में राज से कहा- "यह मेरी मौसी की बहन के पति के ससुर के एकमात्र बेटे की बेटी है।" सोनू और मीतांशी में क्या रिश्ता है।

(उत्तर इसी अंक में)

जलराशि पर आधारित देशों के नाम

संवाद
श्रीधर बर्वे

(दादाजी कमरे में बैठे कुछ पढ़ रहे हैं, इस समय दो किशोरों का प्रवेश)

आशीष और मनीष - दादाजी प्रणाम!

दादाजी - बच्चो!, खुश रहो - कहो क्या काम आ गया?

आशीष - हमारे देश के तीन नाम प्रचलित हैं- भारत, हिन्दुस्तान और इण्डिया। इनमें भारत नाम का कारण हमारी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में है, जबकि हिन्दुस्तान और इंडिया नाम कैसे आये?

दादाजी - हमारे देश के हिन्दुस्तान और इंडिया नामों का कारण सिन्धु नदी है। हमारे देश के पश्चिम में फारस देश है जिसे आज कल ईरान कहते हैं, वहाँ के निवासी हमारी सिन्धु नदी को हिन्दु नदी कहते थे। वे 'स' ध्वनि के स्थान पर 'ह' का उपयोग करते थे। हिन्दु नदी के पार का देश हिन्दुस्थान-हिन्दुस्तान कहलाया। इसी प्रकार जब युनानी (ग्रीक) लोग हमारे सम्पर्क में आए तो उन्होंने अपनी उच्चारण विशेषता सुविधा के कारण हिन्दु नदी को इन्दु-इन्डस कहा। इन्डस नदी के कारण हमारा देश इंडिया कहलाया।

मनीष - दादाजी क्या नदियों के कारण और भी देशों के नामकरण हुए हैं?

दादाजी - हाँ, बच्चो! दुनिया में कई देशों ने अपने नाम अपनी प्रमुख नदियों के नाम पर रखे हैं।

आशीष - दादाजी! बताइए ना।

दादाजी - हमारे एशिया महाद्वीप में एक और देश है जिसका नाम भी एक नदी के नाम पर आधारित है। वह नदी है जोर्डन, इसी के नाम का देश है जोर्डन। जोर्डन पश्चिम एशिया का एक अरब देश है, जिसकी राजधानी अम्मान है। जोर्डन नदी जिसका सही नाम यर्दन है, हिमाच्छादित हेर्मान पर्वत से निकलती है। यह यर्दन नदी फिलस्तीन देश की जीवन रेखा है, इसी नदी के पूर्वी तट पर जोर्डन देश स्थित है।.

मनीष - यह जोर्डन सही नाम से पुकारें तो यर्दन नदी कि सागर में मिलती है?

दादाजी - लगभग 250 किलोमीटर लम्बी यर्दन नदी मृत सागर में मिलती है। मृत सागर नाम कुछ अजीब लगता है ना?

आशीष - हम तो आपसे पूछने ही जा रहे थे कि ऐसा विचित्र नाम क्यों है?

दादाजी - बात यह है कि मृत सागर में क्षार और

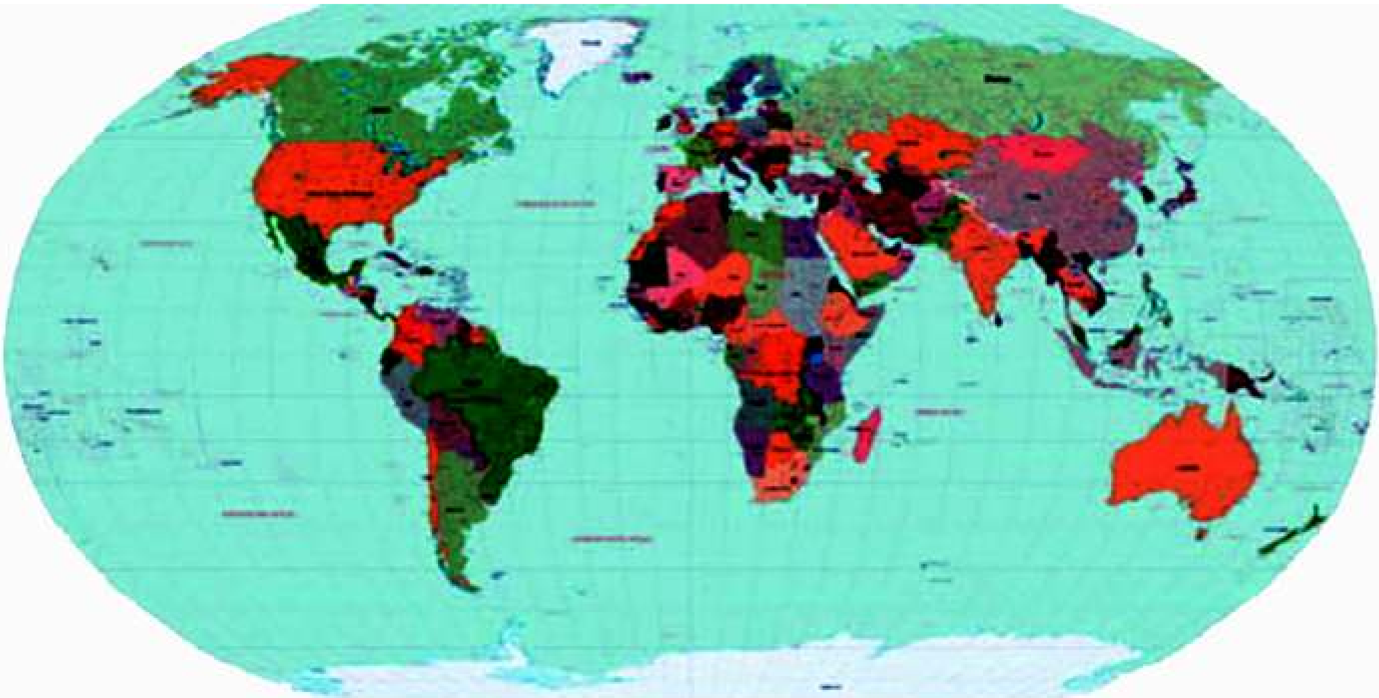

लवण इतने हैं कि उसमें कोई प्राणी जीवित नहीं रह सकता और उसके पानी का घनत्व इतना अधिक है कि कोई भी प्राणी उसमें डूब नहीं सकता।

मनीष - और कोई देश है जिनके नाम नदियों के नाम पर आधारित हैं?

दादाजी- अफ्रीका महाद्वीप में बहुत से ऐसे देश हैं जिन्होंने अपने नाम नदियों के नाम के आधार पर रखे हैं।

आशीष - बतलाइए न दादाजी!

दादाजी - शुरुआत करते हैं पश्चिम अफ्रीका से। वहाँ दो मझौली नदियाँ बहती हैं- सेनेगल और गैम्बिया। इन दोनों नदियों के नाम के देश हैं। सेनेगल पहले फ्रांस का और गौम्बिया ब्रिटेन का उपनिवेश था। मजेदार बात तो यह है कि गौम्बिया देश ऐसा लगता है मानो सेनेगल की गोद में बसा हो। सेनेगल देश के भीतर गैम्बिया नदी बहती है। इसी नदी के तट के दोनों ओर लम्बाई में 300 किलोमीटर तक गैम्बिया देश आबाद है। सेनेगल और गैम्बिया दोनों नदियाँ अटलाण्टिक महासागर में जाकर मिलती हैं।

मनीष - पश्चिमी अफ्रीका में और कोई ऐसे देश हैं?

दादाजी - हाँ बच्चो! पश्चिमी अफ्रीका में एक बड़ी नदी नाइजर है। इस नदी के नाम के आधार पर सीधे-सीधे नाइजरर नाम का देश है और दूसरा देश है नाइजीरिया। दोनों पड़ोसी देश हैं। दोनों को इस नदी के जल से जीवन मिलता है।

4180 किलोमीटर लम्बी नाइजर नदी भी अटलांटिक महासागर में विलीन होकर अपनी यात्रा पूरी करती है।

और हाँ, अभी कुछ और नदी नाम वाले देश हैं।

आशीष - वे कौन से देश हैं?

दादाजी - दो देश तो कांगो नदी के नाम पर हैं। एक अफ्रीका का दूसरा बड़ा, क्षेत्रफल के मान से, देश डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो है जिसकी राजधानी किन्शासा है और दूसरा कांगो है- रिपब्लिक ऑफ कांगो जिसकी राजधानी है ब्राजाविल। यह देश पहले फ्रांस के अधीन था। कांगो नदी अपनी 4700 किलोमीटर की यात्रा अटलांटिक महासागर में मिलकर पूरी करती है।

अब अंत में एक और अफ्रीकी देश जैम्बिया के सम्बन्ध में जान लो। मध्यदक्षिणी अफ्रीका में जैम्बासी नदी है। इस नदी के नाम के आधार पर जैम्बिया देश ने अपना नामकरण किया है, जैम्बिया पहले उत्तरी

रोडेसिया कहलाता था।

अफ्रीका के सम्बन्ध नदियों की बात पूरी करने के पहले याद दिला दूँ कि पूर्वोत्तर अफ्रीका के देश मिस्र को नील नदी का उपहार कहते हैं क्योंकि नील नदी के कारण ही मिस्र में सभ्यता का विकास हुआ और वह देश समृद्ध हुआ है। मिस्र को इजिप्ट भी कहते हैं।

नदी तो नहीं किन्तु झीलों ने भी अफ्रीका के दो देशों को नाम प्रदान किये हैं। एक देश है 'चाड' जो अफ्रीका के मध्य में उत्तर की ओर स्थित है। चाड देश नाइजर, सूडान और लिबिया से घिरा हुआ सागर तट से वंचित देश है।

दक्षिण की ओर मध्य भाग में स्थित मलावी नाम का एक छोटा देश है, वहाँ मलावी नामक एक झील है। इस झील के आधार पर मलावी देश ने नाम ग्रहण किया है। मलावी देश और झील का नाम आजादी प्राप्ति के पहले न्यासालैण्ड और न्यासा झील हुआ करता था। मलावी देश तांजानिया, जैम्बिया और मोजाम्बिक से घिरा हुआ समुद्र तट से वंचित देश है।

मनीष - क्या किसी और महाद्वीप में भी ऐसे देश हैं? जिनका नामकरण जल राशि के नाम पर हुआ है?

दादाजी - हाँ, तुम दक्षिण अमेरिका महाद्वीप के मानचित्रों को ध्यान से देखो। वहाँ ऐसे तीन देश हैं, जिन्होंने अपने नाम नदियों के आधार पर रखें हैं ये देश हैं- युरुग्वे, पेराग्वे और सूरीनाम। इन देशों में इन्हीं नाम की नदियाँ बहती हैं। इनमें पेरराग्वे ऐसा देश है जिसके पास समुद्र तट नहीं हैं, लेकिन उसे इसकी कोई कमी अनुभव नहीं होती क्योंकि पेराग्वे जो उसकी मुख्य नदी है वह इतनी चौड़ी है कि अटलांटिक महासागर में उसके मुहाने से दूर तक पेराग्वे देश में जलयान चले आते हैं और जलमार्ग से उसका व्यापार जारी रहता है।

आशीष - दादाजी! हमने तो सुना है कि पानी पर कुछ नहीं लिखा जा सकता लेकिन जलराशि नदियों-झीलों ने इतने देशों को नाम प्रदान किये हैं।

दादाजी - एक और देश का नाम मत भूलो। इसी महाद्वीप का दूसरा बड़ा देश हैं अर्जेण्टिना।

इस देश को भी नाम पानी के कारण ही मिला है। अर्जेण्टिनाकी मुख्य भाषा स्पेनी है, स्पेनी भाषा का उद्गम हुआ है लेटिन भाषा से। लेटिन भाषा में अर्जेण्टिनन चाँदी को कहते हैं। इस देश में झीलों नदियों की बड़ी संख्या है। इनका पानी धूप, चाँदनी रात में चाँदी की भाँति चमचम चमकता है। इसी का अर्जेण्टिना उसका सार्थक नाम है।

मनीष - पानी की महिमा अपरम्पपार है। जल से ही जीवन है, जल है तो कल है। दूर-दूर देशों की बातें कर लीं। हमारे ही देश में पाँच नदियों का प्रदेश पंजाब है, इसी नाम का प्रदेश पड़ोसी देश पाकिस्तान में भी है।

आशीष - हाँ, याद आया, ये पाँच नदियाँ है- रावी, चिनाब, झेलम, सतलज और ब्यास। ये सब नदियाँ सिन्धु नदी में मिल जाती हैं और सिन्धु नदी के नाम पर पाकिस्तान में सिन्ध प्रदेश भी है।

दादाजी- हम फिर सिंध पर पहुँचे, बात करते-करते और इसी नदी ने हमारे देश को हिन्द और इण्डिया नाम दिये हैं।

- इन्दौर (म.प्र.)

आओ खेलें खेल (1)

- चाँद मोहम्मद घोसी

अंक 1 की सहायता से मछली का सरल सुंदर चित्र बनाना सीखो।

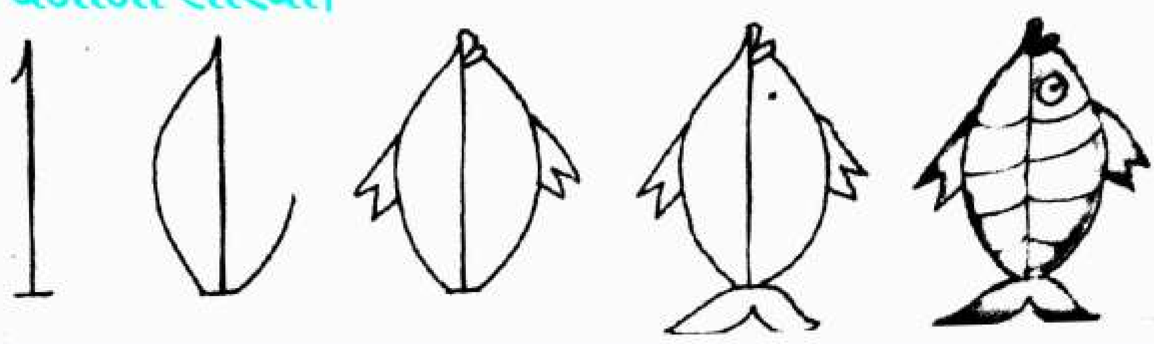

रम्मो और कल्लो

बाल प्रस्तुति
ओशिन जादौन

कुछ वर्ष पूर्व यह घटना है। हमार घर सरजु बाई घर का काम करने के लिए आया करती थी। यदि कभी वह नहीं आती तो उसकी दोनों बेटियाँ रम्मो और कल्लो आया करती। हमारे परिवार में बड़ा ही प्यार था। हमारे घर के बच्चे उन्हें सरजू काकी कहकर बुलाते व रम्मो और कल्लो को दीदी कहकर। एक दिन बाबूजी ने पूछा "रम्मो कल्लो तुम विद्यालय नहीं जाती?" रम्मो ने उत्तर दिया "यदि हम विद्यालय जाएगे तो माँ का हाथ कौन बटाएगा?" बाबूजी ने कहा "तुम्हारी कभी विद्यालय जाने की इच्छा है?" दोनों ने कहा "है।" बाबूजी ने अगले दिन कल्लो और रम्मो की माँ से कहा "मैं इन दोनों बेटियों को पढाऊँगा और इनका खर्च भी उठाऊँगा।" सरजू ने कहा "यदि विद्यालय जाएगी तो हमारा काम?" बाबूजी बोले- "ये लोग काम करने के पश्चात मेरे पास पढ़ने आएं" तब सरजू ने अपने पति से अनुमति लेने को कहा। अगले दिन सरजू ने अपने पति से पूछकर बाबूजी को हाँ कह दी। वे दोनों लड़कियाँ नियमित एक वर्ष तक बाबूजी के पास पढ़ती रही, और कुछ समय पश्चात दोनों ने आठवीं कक्षा में प्रवेश लिया। रम्मो प्रथम श्रेणी में और कल्लो द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुई। इसी तरह कुछ समय पश्चात उन्होंने कक्षा नवमीं में प्रवेश लिया और उत्तीर्ण हुई। यह क्रम चलता रहा। रम्मो और कल्लो के पिताजी प्रफुल्लित होकर सभी दूर मिठाई बाँटते फिर रहे थे और कुछ समय पश्चात बाबूजी से कहा "आप ही ने इनका जीवन बनाया है आप ही इनका विवाह करवाइए।" बाबूजी ने कहा "ठीक है।" कुछ समय पश्चात हमारे घर एक पत्र आया। उस पत्र में किसी की शादी का निमंत्रण था। जब मैंने वह पत्र पढ़ा तो उसमें लिखा था कलावती और रमावती का विवाह होने वाला है। मैं यह पढ़ते ही समझ गया कि रम्मो और कल्लो है। तब हम सब वहाँ गए और मैंने उन्हें मनपूर्वक आशीर्वाद दिया।

- उज्जैन (म.प्र.)

चार पहेली

पहेलियाँ
राकेश चक्र

(1)
कान पे रख बातें करें
पास दूर की भाय।
ज्यादा उसमें जो रमें
बहरा कान बनाय।।

(2)
अक्षर-अक्षर हैं लिखे
चौखुंटा है रूप।
ज्ञान जो देती है सदा
पढ़कर लगे अनूप।।

(3)
आँखों से दीखे नहीं
तारों में छिप जाय।
जिसके बिन सब सून है
उजियारा कर जाय।।

(4)
डिब्बा सा है एक वह
अन्दर जड़ी मशीन।
ऑनबटन जब भी किया
दुनिया लगी हसीन।।

- मुरादाबाद (उ.प्र.)

(सही उत्तर इसी अंक में)

बताओ तो जानें

- राजेश गुजर

बच्चो,
जोकर के चित्र को
ध्यान से देखकर
बताओ।
इसमें कुल
कितने वृत्त हैं?

अलभ्य की चिंता

कहानी

गौरव वाजपेयी 'स्वप्निल'

अलभ्य सरस्वती विद्या मंदिर का कक्षा छ: का विद्यार्थी था। वह अत्यंत समझदार तथा मेधावी था। कक्षा में हर परीक्षा में वह प्रथम स्थान प्राप्त करता था। इसलिए सभी शिक्षकों का लाड़ला भी था। विद्यालय में अनुशासन के मामले में शिक्षक उसकी मिसाल देते थे। उसके पिता का देहान्त हो चुका था। उसकी माँ मामूली नौकरी कर घर का खर्च चलाती थीं।

एक दिन कक्षाचार्य जी ने कक्षा में घोषणा की कि अगले महीने विद्यालय बच्चों को घुमाने हरिद्वार, देहरादून और मसूरी ले जाएगा। सभी बच्चों को दस दिन के भीतर एक हजार रुपए पर्यटन शुल्क के रूप में जमा करने थे। यद्यपि यह भी कहा गया था कि जो जाना चाहते हैं, वहीं शुल्क जमा करें, तथापि यह आशा भी की गई कि अधिक से अधिक बच्चे पर्यटन के लिए जाएँ।

अलभ्य पशोपेश में था। वह जानता था कि माँ विद्यालय और रिक्शे की फीस ही कितनी मुश्किल से जुटा पाती है, ऐसे में उस पर यह अतिरिक्त बोझ डालना शायद उचित नहीं होगा। इसलिए उसने माँ को इस बारे में कुछ भी नहीं बताया था।

पर्यटन शुल्क जमा करने की अंतिम तिथि नजदीक आ रही थी। कक्षा के अन्य विद्यार्थी पर्यटन यात्रा को लेकर अत्यंत उत्साहित थे।

नक्षत्र चहकते हुए बोला- ''मेरे पिताजी ने आज पैसे जमा कर दिए हैं। साथ ही मुझे जेब खर्च के लिए दो हजार रुपए देने का भी वादा किया है।''

वरुण ने आश्चर्य जताते हुए कहा- ''दो हजार रुपए। इतने रुपयों का तुम क्या करोगे नक्षत्र?''

''क्या करूँगा? खर्च करूँगा। पिताजी ने कहा कि जो मर्जी हो खाना-पीना। मैं तो अपने पसंद के खिलौने भी लूँगा। पिताजी ने अनुमति दे दी है।'' नक्षत्र की आँखों में उत्साह की चमक थी।

''मैं भी आज माँ से बोलूँगी कि पिताजी मुझे भी पैसे दो। मैं भी नक्षत्र की तरह ही अपने मनपसंद खिलौने लूँगी।''हँसिका बोली।

''अलभ्य! तुम्हारी क्या योजना है?'' निमिष ने पूछा।

''मेरी... मेरी योजना क्या है?'' हड़बड़ाते हुए अलभ्य ने कहा। माँ एक-दो दिन में पैसे दे देंगी।'' अलभ्य ने कह तो दिया पर उसने तो घर पर माँ से जिक्र भी नहीं किया था। एक तरफ बालमन साथियों के साथ घूमने-फिरने को लालायित था, दूसरी ओर माँ पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ की चिंता भी सता रही थी।

अगले दिन कक्षाचार्य जी ने कक्षा में घोषणा की- ''जिन बालक-बालिकाओं के माता-पिता की ओर से अभी पर्यटन यात्रा के लिए सहमति नहीं दी गई है, आज से मैं उनके घर सम्पर्क करूँगा और उन्हें इस बहुपयोगी यात्रा के लिए राजी करने का प्रयास करूँगा।'' अब तो अलभ्य की चिंता और भी बढ़ गई। ''आचार्य जी घर आएँगे और मैंने माँ को अभी तक बताया भी नहीं है। क्या करूँ?'' अलभ्य के मन में भयानक उलझन थी। वह समझ नहीं पा रहा था कि क्या करे?

अन्ततोगत्वा उसने निर्णय किया कि वह माँ को पर्यटन यात्रा के विषय में बता देगा।

विद्यालय से वह जब घर पहुँचा तो देखा कि माँ रसोई में उसके लिए गरमागरम रोटी सेंक रही हैं। ''आ जा बेटा! आज मैंने तेरी मनपसंद कटहल की सब्जी बनाई है। कपड़े बदलकर हाथ मुँह धो ले और खाने बैठ जा। माँ ने उसे दुलारते हुए कहा। ''जी माँ बस दो मिनट में आता हूँ। कहकर अलभ्य कपड़े बदलने चला गया, पर उसके मन में अभी भी उलझन थी कि माँ को पर्यटन यात्रा के बारे में क्या और कैसे कहे?

''वाह माँ! क्या गजब की सब्जी बनाई है आपने? सारा प्यार सब्जी में ही डाल देती हो आप।'' अलभ्य खाने का स्वाद लेते हुए बोला। ''चल खा ले चुपचाप।'' माँ वात्सल्य भाव से भरकर उसके सिर पर हाथ रखते हुए बोली।

''माँ! पता है हमारे विद्यालय का टूर जा रहा है।

आचार्य जी ने कहा है कि बहुत कुछ सीखने को मिलेगा। जो कुछ हम भूगोल की पुस्तकों में पढ़ते हैं, नदियाँ, पहाड़, झरने, भाबर, तराई, बोल्डर पत्थर सब कुछ साक्षात देखने को मिलेगा।'' अलभ्य की आँखों में बताते हुए उल्लास की चमक साफ दिख रही थी। ''अरे वाह! यह तो बहुत अच्छी बात है कब जा रहा हैं टूर?'' माँ ने पूछा।

''अगले महीने की दस तारीख को जाना है और तेरह को वापसी है। पर माँ मेरा मन नहीं है जाने का।'' अलभ्य बोला। ''अरे! क्यों नहीं है मन? ऐसे मौके तो बहुत कम आते हैं बेटे। सारे बच्चे जा रहे होंगे और तू नहीं जाएगा। नदी, पहाड़, झरने आदि सब देखने को मिलेंगे। कितना मजा आएगा? सोचकर तो देख।'' माँ ने प्यार भरे गुस्से से कहा। ''नहीं माँ! मन नहीं कर रहा आपको छोड़कर जाने का।'' अलभ्य माँ के गले में बाँहे डालते हुए बोला।

''कहाँ-कहाँ नहीं जाएगा मुझे छोड़कर मेरे लाड़ले? बड़ा होकर तो बाहर जाना होगा।'' - माँ गाल पर प्यार करते हुए बोली।

''कहीं नहीं जाऊँगा आपको छोड़कर। बाहर पढ़ने भी नहीं।'' अलभ्य बोला।

माँ से बात हो ही रही थी कि दरवाजा खटका। ''अलभ्य भैया!''

''अरे यह तो आचार्य जी की आवाज है।'' मन ही मन अलभ्य बोला। माँ शायद आचार्य जी आए हैं। बैठक खोलता हूँ मैं। आप चाय बना लीजिए।'' अलभ्य माँ से कहते हुए बैठक कक्ष खोलने चला गया।

''प्रणाम आचार्य जी!'' अलभ्य ने बैठक कक्ष खोलते हुए कहा।

''विद्यावान भव! माताजी हैं न घर पर?'' आचार्य जी ने पूछा। ''जी आचार्य जी! अलभ्य ने उत्तर दिया। तभी अलभ्य की माँ ने बैठक में आकर आचार्य को अभिवादन किया। ''आइए बहन जी! आज मैं एक अत्यंत विशिष्ट कार्य हेतु अभिभावकों से सम्पर्क करने निकला हूँ। सोचा शुरुआत अलभ्य से ही करूँ।'' आचार्य जी ने अभिवादन का उत्तर देते हुए कहा।

''अलभ्य ने पर्यटन यात्रा के विषय में तो आपको बताया ही होगा। हम सभी शिक्षकगण चाहते हैं कि इस बहुपयोगी यात्रा से सभी बच्चे लाभान्वित हों और सभी पर्यटन व पर्यटन से जुड़ी शैक्षणिक गतिविधियों का आनन्द लें।'' ''जी आचार्य जी! बताया अलभ्य ने मुझे। मैं तो चाहती हूँ कि यह जरूर जाए, पर पता नहीं क्यों यह ही मना कर रहा है।'' अलभ्य की माँ ने कहा। ''क्यों अलभ्य भैया? आप क्यों नहीं जाना चाहते? आप तो कक्षा के सबसे मेधावी छात्र हैं।'' आचार्य जी ने पूछा।

अलभ्य सोच रहा था कि पर्यटन का शुल्क के विषय में न तो माँ को कुछ पता है और आचार्य जी ने भी इसकी चर्चा अभी तक नहीं की है। वह क्या जवाब दे, उसे समझ में नहीं आ रहा था। वह शुल्क को लेकर अपनी माँ का सिर झुकते नहीं देखना चाहता था।

''कुछ नहीं आचार्य जी! माँ अकेली हो जाएगी तीन-चार दिन। यह सोचकर मन घबरा रहा है।'' अलभ्य ने बात बनाने की कोशिश की।

''बेटा! बात कुछ और है। तू बताता क्यों नहीं? गर्मी की छुट्टियों में तू अपनी मौसी के घर पन्द्रह दिन के लिए गया था, तब तो मैं अकेली ही रही थी।'' माँ ने अलभ्य से पूछा।

''आचार्य जी! विद्यालय ने इस पर्यटन यात्रा का कुछ शुल्क भी रखा है क्या?'' माँ ने पूछा।

''जी बहन जी! विद्यालय ने एक हजार रुपए प्रति छात्र शुल्क तय किया था, किन्तु छात्रहित में अब इसे कम करके छ: सौ रुपए प्रति छात्र कर दिया गया है ताकि अधिक से अधिक बच्चे पर्यटन यात्रा पर जा सकें।'' आचार्य जी ने उत्तर दिया। माँ समझ गई थी कि अलभ्य के मन में क्या चल रहा है। ''अलभ्य अवश्य जाएगा आचार्य जी।'' माँ ने भीतर से छ: सौ रुपए आचार्य जी को लाकर देते हुए कहा। ''मैं इसके मन का संकोच बहुत अच्छी तरह जानती हूँ आचार्य जी!'' माँ ने पल्लू से अपनी आँखों में आए आँसू पोंछते हुए कहा।

''रो मत माँ!''कहते हुए अलभ्य माँ के सीने से चिपक गया।

- मुजफ्फर नगर(उ.प्र.)

आपकी पाती

✲ श्यामपलट पाण्डेय, अहमदाबाद (गुज.)

देवपुत्र का अप्रैल 20 अंक मिला। शौर्य और बलिदान पर केन्द्रित यह अंक रोचक व ज्ञानवर्धक और प्रेरक सामग्री से भरपूर है। अपनी बात शीर्षक के अंतर्गत लिखे एक संपादकीय में आपने बलिदान स्थलों के प्रति सरकार और समाज के अपेक्षित रवैए पर करारी चोट की है, जो सर्वथा उचित है।

इस बर्ष का देवपुत्र गौरव सम्मान सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री राजा चौरसिया को प्रदान किया गया है। श्री राजा चौरसिया हिन्दी बाल साहित्य के मूर्धन्य रचनाकार हैं और इस सम्मान के लिए वे सबसे अधिक डिजर्व करते हैं। वे बाल साहित्य की विभिन्न विधाओं को अपनी बेहतरीन रचनाओं से पिछले कई दशकों से समृद्ध करते रहे हैं। इस सटीक चमन के लिए निर्णायक मंडल को मैं अपनी हार्दिक बधाई देता हूँ।

इस सम्मानोत्सव की चर्चा आपने पत्रिका का एक पूरा पृष्ठ देकर की है। जो अपने आप में एक बहुत बड़ी बात है। सम्मान समारोह का प्रतिवेदन इतना सुंदर है कि लगता है कि इस जीवंत आयोजन की रसधार में बहे जा रहे हैं।

अंगूर
चित्रकथा-
भूखी लोमड़ी का अंगूर के लटके गुच्छे देखकर जी ललचाया.
ये अंगूर बड़े मीठे और स्वादिष्ट लग रहे हैं..
लोमड़ी बहुत उछली-कूदी...
पर अंगूर उसके हाथ ना आए.
फिर क्या था उसने जिराफ की 'कद बढाओ कक्षा में प्रवेश ले लिया
कद ब

वह सच बोला

कहानी

गोविन्द शर्मा

अंग्रेज अधिकारी चार-पाँच सिपाहियों के साथ धड़धड़ाता आया और विद्यालय के प्रधानाध्यापक के कार्यालय में उनकी कुर्सी पर बैठ गया। प्रधानाध्यापक उस समय किसी कक्षा में पढ़ा रहे थे। उन्हें पता चला तो कक्षा छोड़कर कार्यालय में आये। अब अंग्रेज अधिकारी कुर्सी पर बैठा था तो प्रधानाध्यापक उनके सामने खड़े थे। कुछ दूसरे अध्यापक भी ताकाझांकी करने लगे। ऐसा नजारा उन्होंने पहली बार देखा कि कोई प्रधानाध्यापक की कुर्सी पर बैठा है और स्वयं हेडमास्टर उसके सामने खड़े हैं। अंग्रेज अधिकारी को बस अंग्रेजी आती थी, जबकि प्रधानाध्यापक हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं के जानकार थे। बात अंग्रेजी में हुई।

"तुम्हारे विद्यालय में कोई रोहित नाम का लड़का है?"

"मेरे विद्यालय में तो कई रोहित हैं।"

"रोहित... जो बागी रामसिंह का बेटा है।"

प्रधानाध्यापक को याद आया- आठवीं का एक छात्र रोहित, जो पढ़ने में बहुत ही होशियार है। लोग उसके पिता को स्वतंत्रता सेनानी कहते हैं।

"हाँ, है, पर वह तो बहुत अच्छा लड़का है। वह सदा सच बोलता है।"

"हमें भी यही चाहिए। उसके बाप ने ब्रिटिश राज के नाक में दम कर रखा है। उसे पकड़ने की हम बहुत कोशिश कर चुके, पर वह हाथ नहीं आ रहा है। हम जानना चाहते हैं कि इस समय वह कहाँ है। बुलाओ बच्चे को।"

बच्चे को बुलाया गया। कार्यालय में आते ही रोहित ने सभी को हाथ जोड़कर जयहिन्द कहा।

अंग्रेज अधिकारी जयहिन्द का मतलब समझता था। वह यह भी समझ गया कि यह वहीं रोहित है, जिसके पिता की उन्हें तलाश है।

प्रधानाध्यापक ने रोहित से कहा- "साहब! विद्यालय में बहुत दूर से चलकर आये हैं। ये जानना चाहते हैं कि तुम्हारे पिता इस समय कहाँ हैं?"

रोहित ने जवाब दिया- "वे जेल में हैं। कैदखाने में हैं।

प्रधानाध्यापक ने यही बात अंग्रेजी में अंग्रेज अधिकारी को बताई। साथ ही यह भी कहा कि यह बच्चा कभी झूठ नहीं बोलता।

अंग्रेज अधिकारी यह सुनकर सोच में पड़ गया। संभव है वह हमारी किसी जेल में हो अपने असली नाम के साथ या किसी दूसरे नाम से। यही कारण होगा कि वह हमें मिल नहीं रहा है। यदि वह मिल जाये तो हम कितने ही छिपे हुए बागियों के रहस्य उससे उगलवा लेंगे। अंग्रेज अधिकारी बिना कुछ बोले, वहाँ से चला गया।

उन दिनों फोन या मोबाइल नहीं होते थे। इसलिए उसने कुछ खास जेलों में अपने आदमी भेजे। सब जगह पत्र भी भेजा कि रामसिंह नाम का बागी जहाँ कहीं भी हो, उसकी सूचना मुझे दी जाए।

पन्द्रह दिन बाद अंग्रेज अधिकारी फिर उसी विद्यालय के उसी कार्यालय में आया और प्रधानाध्यापक पर बरसने लगा। तुमने झूठ बोला कि यह बच्चा रोहित सदा सच बोलता है। बच्चे का यह झूठ है कि उसका पिता जेल में है। हमने सब जेलों में तलाश करवा लिया है। वह कहीं बाहर ही है।

प्रधानाध्यापक को रोहित के झूठ बोलने पर आश्चर्य हुआ। रोहित को बुलाया गया प्रधानाध्यापक ने उससे कहा- "रोहित! तुमने यह झूठ क्यों बोला कि तुम्हारे पिता जेल में है। अंग्रेज अधिकारी ने सभी जेलों में पता कर लिया है। तुम्हारे पिता किसी जेल में नहीं है।"

"नहीं, मैं झूठ नहीं बोल रहा। सच कह रहा हूँ कि मेरे पिता जेल में है। अंग्रेजों की जेल में हैं।"

"किस जेल में हैं?"

"उसी जेल में, जिसमें आप हैं, मैं हूँ। अंग्रेजों की जेल में। अंग्रेजों ने पूरे देश को गुलामी की जंजीरों में जकड़कर गुलाम बना रखा है। क्या आप अपने आपको आजाद कह सकते हैं?"

बच्चे के इस उत्तर से प्रधानाध्यापक आश्चर्यचकित

रह गए। अंग्रेज अधिकारी आग बबूला हो गया। वह बोला- "हेडमास्टर! इस बच्चे को विद्यालय से निकाल दो। वरना यह दूसरे बच्चों को बिगाड़ सकता है।"

फिर बच्चे की तरफ गुस्से में देखते हुए बोला- "जैसा बाप, वैसा बेटा।"

अब तक प्रधानाध्यापक ने बहुत कुछ सोच लिया था। बोले- "सर, मैं इस बच्चे को विद्यालय से नहीं निकाल सकता। सर, हमारे देश में टीचर या मास्टर को गुरु कहते हैं। जब तक विद्यालय के बच्चे मुझे गुरु मानते रहे हैं, आज मैं इस रोहित को अपना गुरु कहता हूँ। अब मैं भी इस जेल की सलाखें तोड़ने के महायज्ञ में अपनी आहुति दूंगा।"

अंग्रेज का गुस्सा अब सातवें आसमान था। वह आया था एक क्रांतिकारी को पकड़ने वह तो हाथ नहीं आया, पर प्रधानाध्यापक के विचार क्रांतिकारी जरूर हो गए। गुस्से में पैर पटकते हुए बोला- "तुम्हारी इस हिमाकत पर मैं तुम्हें गिरफ्तार कर सकता था। हमारे जज इस बात की इजाजत नहीं देंगे। पर याद रखना यदि तुमने ब्रिटिश शासन के खिलाफ कोई हरकत की तो पकड़ने में देरी नहीं करूँगा।"

अंग्रेज अधिकारी चला गया। प्रधानाध्यापक ने रोहित की तरफ देखते हुए कहा- "तुम्हारे सच ने मेरी आँखें खोल दीं। अब मैं ज्यादा दिन इस विद्यालय में नहीं रहूंगा। मैं स्वतंत्रता के लिए किसी न किसी तरीके से लड़ूगा। पर तुम न तो यह विद्यालय छोड़ना और न पढ़ना छोड़ना। खूब पढ़ लिखकर अपने आपको इतना योग्य बनाना कि तुम बहादुरी से अंग्रेजी शासन से लोहा ले सको।"

रोहित की आँखों में आंसू आ गए। उसने प्रधानाध्यापक जी के चरण छूते हुए कहा- "गुरुजी! मेरे पिता भी जब घर से निकले थे, तब मुझे उन्होंने यही कहा था..."

अब भावुक होकर प्रधानाध्यापक ने रोहित को गले लगा लिया।

- संगरिया (राज.)

|| स्तम्भ ||

स्वयं बनें वैज्ञानिक :

चलो करते हैं ग्लास गायब

आलेख | अनुवाद
डॉ. राजीव तांबे | सुरेश कुलकर्णी

बच्चो! हम हर माह एक नई खोज या सर्कस या कुछ नया प्रयोग करते रहते हैं। इस बार हम ग्लास गायब करके दिखाते हैं आपको। चलो सब तैयार हैं। इसके लिए निम्नलिखित चीजों की हमें आवश्यकता पड़ेगी।

एक काँच का बड़ा बर्तन

दो लीटर तेल, (मूंगफली या सोयाबीन)

2 लीटर पानी

एक काँच का गिलास

दो चम्मच

चलो अब प्रयोग शुरु करते हैं

काँच के बर्तन में पहले दो लीटर पानी डाल लें। अब इसमें ग्लास छोड़ दें। ग्लास पानी में डूब जाता है फिर भी हम सामने से देखे तो वह नजर आता है। वह गायब नहीं हुआ है। अब हमको काँच का बर्तन खाली करके उसको साफ करना है। अब बर्तन साफ है और उस काँच के बर्तन में दो लीटर तेल डालते हैं। तेल डालते ने पश्चात उसमें धीरे से काँच का गिलास छोड़ दे। सामने से देखे तो यह अहसास होगा कि गिलास गायब हो गया है या गिलास तेल में घुल गया है।

यह क्यों होता है? चलो इसका कारण भी आपको बता देते हैं-

जब काँच के बर्तन में गिलास छोड़ते हैं तब गिलास पानी और काँच इनमें से जो प्रकाश किरण परावर्तित होते हैं, वे सीधे अपनी नजर में जाने के कारण प्रारम्भ में हमें गिलास नजर आता है। जब उसी बर्तन में हम तेल डालते है तब प्रकाश किरणों की गति में परिवर्तन होता है, तेल में उस गति का परिवर्तन वहीं होता है परन्तु अपनी नजर में माध्यम (पहले पानी व बाद में तेल) बदलने के कारण प्रकाश का वक्रीकरण होने से हमें गिलास नहीं दिखता और हमें लगता है कि गिलास उस तेल में अदृश्य हो गया है।

अब आप यह भी करके देखें -

अगर हमने गिलास की जगह चाय के मग रखे तो क्या होगा? करके देखे।

खोपरे का तेल लिया तो क्या होगा? यह भी करके देखो।

पानी रंगीन लिखा तो क्या होगा? यह भी करके देखो।

ये प्रयोग करो और हमें जरूर बताना आपको प्रयोग कैसे रहे।

फिर मिलते हैं, एक नये प्रयोग के साथ।

तब तक छोटा सा अल्पविराम लेते हैं।

- पुणे (महा.)

बड़े लोगों के हास्य प्रसंग

डॉ. रामकुमार वर्मा बी.ए. में इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में पढ़ते थे। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में एक हालैण्ड हाल है। जहाँ नाटक आदि खेले जाते थे। नाटकों के साथ संगीत का कार्यक्रम भी चला करता था। इस संगीत कार्यक्रम की पूर्ति के लिए श्री सुमित्रानन्दन पंत भी वहीं रहा करते थे। वे जब अपने बड़े-बड़े घुंघराले बालों के साथ कमर तक कोट और लूंगी पहनकर हाल के बरामदे में चलते थे तो उनके बाल उनके कंधों पर बड़े अंदाज से हिलते रहते थे। और ऐसा ज्ञात होता कि हालैण्ड हाल की शोभा बरामदे में विहार कर रही है।

जब कोई गाने की आवश्यकता होती तो पन्त जी तुरंत उसे लिख डालते और नील बाबू जो हारमोनियम बजाने में बड़े लोक प्रिय थे, उसे किसी मोहक राग में बद्ध कर देते। एक बार एक स्त्री पात्र के लिए पन्त जी ने एक गाना लिखा और नील बाबू ने उसे एक अच्छे राग में बद्ध कर दिया, किन्तु इस गाने के लिए जो स्त्री पात्र चुनी गई थी, उससे वह गाना गाया ही नहीं जा रहा था और पन्त जी बार-बार अपने कोमल कंठ से उसे दोहराने के लिए कह रहे थे। जब उस लड़की से वह गाना गाते कतई नहीं बना तो डॉ. राजकुमार वर्मा ने पंत जी से कहा, ''आप इसे ऐसे मंच पर गा दीजिएगा'' ... और उसी बीच वहाँ उपस्थित किसी ने चुटकी लेते हुए पन्त जी से कहा, ''और आपको मेकअप करने की भी जरूरत नहीं पड़ेगी।''

सही उत्तर : शब्दक्रीड़ा

केरल -	मलयालम
तमिलनाडू -	तमिल
आन्ध्र प्रदेश -	तेलगु
कर्नाटक -	कन्नड़
महाराष्ट्र -	मराठी
गुजरात -	गुजराती
पश्चिम बंगाल -	बंगला
पंजाब -	पंजाबी
कश्मीर -	डोगरी
उड़ीसा -	उड़िया

सही उत्तर

संस्कृति प्रश्नमाला - ऋषि ऋष्यश्रृंग, भीष्म, काशी एवं कश्मीर तथा तिब्बत, रामनाथ स्वामी मंदिर रामेश्वरम्, तीस व साठ, पुष्यमित्र शुंग, दो हजार वर्ष, नारायणराव भागवत, रामप्रकाश अग्रवाल, एडोल्फ आईखमेन

चार पहेलियाँ - (1) मोबाईल (2) पुस्तक (3) बिजली (4) टी.वी.

बताओं तो जाने - 35

उलझ गए - मीतांशी सोनू की ममेरी बहन है।

बंदर की नाक

कहानी

सुरेशचंद्र रोहरा

नंदन वन की लाल नदी के तट पर कुनाल नाम का बंदर एक बड़े परिवार के सदस्य के रूप में रहता था। कुनाल अभी किशोर अवस्था में था और सदैव श्रेष्ठतम कार्यों में आगे रहता, शिक्षा में भी उसने नंदन वन में अपना झंडा लहराया हुआ था। प्रतिवर्ष नंदन वन में वह प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होता और अखबार व टेलीविजन पर उसकी चर्चा होती।

मगर धीरे-धीरे कुनाल के स्वभाव में परिवर्तन आने लगा। उसकी सफलता ने उसका दिमाग मानों सातवें आसमान पर पहुँचा दिया। हुआ यह कि अपने आगे वह किसी को कुछ भी नहीं समझता था। दरअसल यह अति आत्मविश्वास के कारण हुआ था।

अचानक आए इस परिवर्तन के परिणामस्वरूप कुनाल के निकट के सभी परिजन, दोस्तों को आश्चर्य हुआ और परेशानी का कारण भी बन गया। उसकी प्रतिभा के कारण कोई कुछ नहीं कर पाता था, परिणाम स्वरूप नंदन वन में सभी जानवरों के मध्य यह चिंता का विषय बन गया कि आखिर कुनाल के गले में घंटी कौन बांधे।

कुनाल किसी को कुछ भी नहीं समझता था। अपने आगे उसे हर कोई नाचीज लगता और वह कब किसका पानी उतार देगा यह कोई नहीं जानता था, धीरे धीरे लोग उसके सामने जाने से कतराने लगे।

एक दिवस कुनाल आँखों पर चश्मा लगाये, कोट, सूट पहने शान से नंदन वन की मुख्य सड़क पर चला जा रहा था कि रामू भालू की मानो शामत ही आ गई। कुनाल को सजा धजा देख रामू ने रुक कर अपने कीमती मोबाईल से कुनाल की फोटो खींचना शुरु कर दिया। अब कुनाल ने जब यह देखा तो प्रसन्न होने की जगह वह नाराज हो उठा

और चिल्लाया- ''रामू! यह क्या तमाशा कर रहे हो?''

रामू भालू ने मुस्कुराकर कहा- ''भैया ! आज तो तुम बेहद आकर्षक लग रहे हो, इसलिए तुम्हारे फोटो खींच रहा था।''

कुनाल ने तीखे स्वर में कहा- ''फोटो, मेरे फोटो! भला क्यों, किससे इजाजत ली आपने, मेरे फोटो खींचने की?''

अब रामू हिचकिचाया बोला- ''भैया ! अब क्या फोटो खींचने की भी, मुझे तुमसे इजाजत लेनी होगी।''

''हाँ, यह कानूनन गलत है। पता है, किसी भी व्यक्ति की फोटो, कोई भी बिना उसकी इजाजत नहीं खींच सकता।'' कुनाल ने रामू की ओर देखते हुए अधिकार पूर्वक कहा।

यह सुनकर रामू को बेहद दु:ख हुआ। उसने सोचा था कुनाल की फोटो खींचकर वह नंदन न्यूज में भेज देगा, लोग देखेंगे तो कुनाल से प्रेरणा लेकर स्मार्ट बनेंगे, अच्छे बनेंगे, मगर यहाँ तो कुनाल के पास से गुजरना भी मुहाल है।

रामू ने रुष्ट होकर कहा-''तुम मुझे कानून सिखाओगे, तुम से यह उम्मीद नहीं थी, मैं तो तुम्हारे ही भले के लिए फोटो खींच रहा था।''

यह सुनकर कुनाल ने चीख कर कहा- ''तुम, मुझे तुम कह रहे हो, पता नहीं मैं जल्द ही आईएएस अधिकारी बनने वाला हूँ... तुम तो मर्यादा, सम्मान, गरिमा सब भूल गए हो।''

रामू को समझते देर नहीं लगी की कुनाल पर शिक्षा का उल्टा असर हो रहा है, यह अपनी नाक पर मक्खी भी बैठने नहीं देने वाला इससे बहस फिजूल है। सो उसने हाथ जोड़ लिए और कहा- ''कुनाल भैया! मुझे माफ करो... मैं अज्ञानी हूँ।''

कुनाल के चेहरे पर अति आत्मविश्वास स्पष्ट झलक रहा था वह बोला- ''देखो, तुम मुझसे उम्र में बड़े हो मगर मैं तुम्हें बता दूँ आगे कभी किसी का भी फोटो बिना इजाजत नहीं खींचना, यह दण्डनीय अपराध है।''

रामू ने सर झुका कर कहा- ''जी भैया! मैं अब कभी ऐसी गलती जिंदगी में नहीं करूँगा।'' यह सुनकर कुनाल सर उठा गर्व से आगे बढ़ गया।

एक दिन कुनाल मोटर साइकिल पर जा रहा था और आगे एक टैक्सी से जा भिड़ा। दुर्घटना में कुनाल को गहरी चोटें आई वह सड़क पर पड़ा था। टैक्सी ड्राइवर उसे ठोक कर भाग खड़ा हुआ। नंदन वन के जानवरों ने देखा तो सकते में आ गए मगर सभी को कुनाल के व्यवहार के बारे में पता चल चुका था। अत: कोई आगे आकर उसकी मदद करने को तत्पर नहीं था। कुनाल वाहन के नीचे दबा दर्द से बिलबिला रहा था बचाओ, बचाओ। मगर उसे देखकर राजू, लालू, श्याम, राम जंगल के जानवर आगे बढ़ गए। किसी ने आगे बढ़कर मदद नहीं की। तभी रामू भालू ने वहां से जाते हुए कुनाल को देखा, तो उसकी मदद को आगे बढ़ा। यह देख लालू ने उसे टोका- ''रामू! कहां जा रहे हो।''

रामू भालू ने कहा- ''देखो न! कुनाल पड़ा तड़प रहा है बेचारे को सहायता की आवश्यकता है।''

यह सुन श्याम ने कहा, मैं तो कहता हूँ इसे यही पड़े रहने दो, यही इसका सबक है। मुझे एक दिन सहायता की आवश्यकता थी, यह अकेला शहर जा रहा था मैंने कहा- ''मुझे भी साथ ले चलो, तो बोला मैं तुम्हारा रिश्तेदार हूँ क्या? और चला गया भाई इसमे जरा भी सज्जनता और भाईचारा नहीं है।''

राम ने कहा- ''भाई यह शिक्षित होकर भी अशिक्षित हो गया है, नाक पर मक्खी भी नहीं बैठने देता, तो भला हम क्यों सहायता करें।''

रामू भालू ने उनकी बातों को अनसुना कर आगे बढ़ते हुए कहा- ''भैया! मैं तो कुनाल की सहायता अवश्य करूँगा। अगर यह रास्ते से भटक गया है, व्यवहार कुशल नहीं रहा, किसी की सहायता पर विश्वास नहीं करता तो क्या हम भी वैसे ही हो जाएं यह तो गलत होगा, फिर हम में और इसमें अंतर क्या रहा...?''

कुनाल की और बढ़ते रामू भालू की बातें सुन राम, श्याम, राजू, लालू और अन्य की मानो आँखें खुल गई। सभी लज्जित हो गए और अपना हट छोड़कर कुनाल की सहायता करने जुट गए।

- कोरबा (छ.ग.)

यह देश है वीर जवानों का (10)

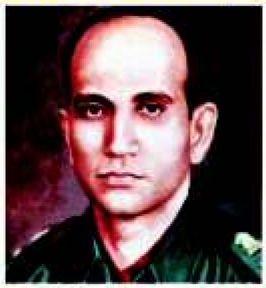

लेफ्टिनेंट कर्नल ए.बी. तारापोर

सन् 1965 सितम्बर की 14 तारीख थी जब चाविण्डा पर अधिकार करने के उद्देश्य से 1 बख्तरबन्द ब्रिगेड के अंग पूना फोर्स (17 हार्स) ने आक्रमण किया पर पूरी सफलता नहीं मिली। पाकिस्तान की दो रेजीमेन्टों ने बख्तरबन्द और इन्फ्रैंट्री द्वारा चावण्डी को घेर रखा था। कमांडिग आफीसर ने भारी प्रतिरोध को देखते हुए युद्ध योजना में परिवर्तन किया। क्षेत्र को अलग थलग करने हेतु 17 हार्स व 8 गढ़वाल राईफल को आदेश मिला और वे 16 सितम्बर को जमोरन-बुटुर-डोगरांडी क्षेत्र में मोर्चा सम्हालने चल पड़े। इसी दिन सुबह अर्थात 16 सितम्बर की प्रात: 14 हार्स व 9 डोगरा की एक कंपनी ने बहुत क्षति उठाकर ही पर जमोरन पर कब्जा कर लिया। उधर 8 गढ़वाल ने बुटूर-डोगरांडी पर भारी क्षति उठाकर भी अन्तत: अधिकार कर लिया। उनके कमांडिंग आफीसर जे.ई. झीरद को सदा के लिए खो देना पाकिस्तान के साथ इस छीनाझपटी में यह बहुमूल्य हानि उठानी पड़ी। एक बार इस स्थान को शत्रु ने फिर कब्जा लिया।

17 सितम्बर 1965 को 43 लारीड ब्रिगेड को कूच का आदेश मिला पर दूरी अधिक थी अत: वह समय पर न पहुँच सकी। हमें आक्रमण रोकना पड़ा। भीषण टैंक युद्ध में 17 हार्स के लेफ्टीनेंट कर्नल ए.बी. तारापोर ने जो टैंक संहार का पराक्रम किया उसे देखने वाले ही नहीं, बाद में सुनने वाले शत्रुओं की आत्मा आज भी कांप जाती है।

भारत ने मरणोपरांत अपने इस महायोद्धा को परमवीर चक्र से सम्मानित किया।

हिन्दी की कुछ विशेषताएँ

- डॉ. दशरथ मसानिया

- संसार में सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली तीसरी भाषा है।
- हिन्दी में मालवी, निमाड़ी, राजस्थानी, भीली, कन्नोजी, बांगरु, मैथिली, ब्रज, बुंदेली, अवधी, छत्तीसगढ़ी आदि लोकभाषाएं हैं।
- यह देवनागरी लिपि में लिखी जाती है, इस लिपि को जैसे बोलते हैं वैसे ही पढ़ते और लिखते हैं। इसलिए इसे वैज्ञानिक लिपि कहते हैं।
- 520 ई. पूर्व पाणिनि ने 'अष्टाध्यायी' व्याकरण ग्रंथ लिखकर एक चमत्कारी कार्य किया जिसमें 4000 सूत्र हैं।
- पाणिनि ने 14 माहेश्वर सूत्रों में 9 स्वर एवं 33 व्यंजनों द्वारा वर्णमाला का निर्माण किया।
- इस लिपि में हिन्दी, संस्कृत, मराठी, नेपाली आदि भाषाएँ लिखी जाती हैं।
- इस लिपि के वर्ण शरीर के दस अंगों से निकलते हैं- कंठ, तालु, मूर्धा, दंत, ओष्ठ, दन्तोष्ठ, कंठ-तालु, कंठोष्ठ, जिव्हामूल और नासिका।
- हिन्दी 14.09.1949 को भारतीय संविधान के अनुच्छेद में राजभाषा के रूप में पारित है।

- आगर मालवा (म.प्र.)

अनोखा उपहार

चित्रकथाः देवांशु वत्स

चिड़े-चिड़ी की शादी

- भगवती प्रसाद गौतम

विषय एक

चिड़े-चिड़ी की शादी में थी
महफिल सजी निराली।
इधर चिड़ा था चुस्त, उधर थी
चिड़ी मस्त मतवाली।

बजे ढोल-ढमाके अब ज्यों ही
आई दुल्हन सजकर
देख नजारा खड़ा हो गया
दूल्हा भी बस तनकर।

मगर निरख दूल्हे का चेहरा
ठिठकी दुल्हन रानी।
मास्क नहीं मुँह पर दूल्हे के,
यह कैसी नादानी?

बोली सुन लो मूर्ख महाशय,
बंद करो यह बाजा।
कभी न होगी शादी तुमसे,
बच लो दुल्हे राजा।

- कोटा (राज.)

चले ऊँट ससुराल

कहानी

प्रभाष मिश्र 'प्रियभाष'

सूट पहनकर चले ऊँट जी, नई-नई ससुराल।
देखते ही बनती थी उनकी अजब निराली चाल।।
पहुँचे जब ससुराल हुई अति उनकी खातिरदारी।
भाँति-भाँति के व्यंजन खाए, पाई पान सुपारी।।
हँसी-मजाक सालियों ने की, लाड़ सास से पाए।
विदा कराकर साथ ऊँटनी जी को वह घर लाए।।

- छिबरामऊ (उ.प्र.)

मुनिया दुल्हन

- शुभदा पांडेय

हरी चुनरिया ओढ़े मुनिया
बनी हुई है दुल्हन।
चमचम चमक रही है बिंदिया
रुनझुन बाजे पैंजन।।
घूँघट लेकर खड़ी आँगने
देखे खेल-खिलौने।
मेरे जैसे दुल्हे राजा
साथी छौने-मौने।।
सब मिलकर लाएँगे बर्तन
दादी ने जो लाया।।
सब्जी-पूड़ी खूब छनेगी
रसगुल्ला है भाया।।
पर बर्तन सब छोटे निकले
हुआ सभी में झगड़ा।
सुलझाने तब दादा आए
लेकर डंडा तगड़ा।।

- शिलचर (असम)

आपकी कविता

बच्चो! ऊपर के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों की कविताएँ पढ़कर नीचे दिए खाली स्थान पर आपको दुल्हन विषय पर ही अपनी कल्पना को पंख लगाकर एक प्यारी सी कविता लिखना है।

हौसला

कहानी

सुशील सरित

सुबह से पड़ोस के घर की टिन्नी के घर तो लोगों का आना-जाना लगा हुआ था। हर कोई उसे बधाई दे रहा था। बात भी बधाई की थी। 95 प्रतिशत अंक आसानी से तो आ नहीं जाते। और उसके। राजू ने एक बार फिर अपनी अंकसूची पर नजर डाली। 54 प्रतिशत। ये भी कोई अंक हैं। राजू ने भारी मन से अंकसूची फिर मेज पर रख दी इससे अच्छा तो...।

दो चार लोगों ने उससे भी पूछा लेकिन प्रतिशत सुनकर सूखे से मुँह से इतना ही कह कर फोन रख दिया कि चलो निकल तो गए। भविष्य की सोच-सोचकर उसका सर दर्द से फटने लगा। माँ ने दो-एक बार खाने का पूछा भी लेकिन थोड़ा सो लूँ तो शायद ये सरदर्द ठीक हो जाये सोचकर वह बिस्तर पर लेट गया और आँखें बन्द कर लीं।

दो तीन घंटे बाद उसकी आँख खुली तो शाम के छ: बज रहे थे। बाहर थोड़ा अंधेरा सा हो रहा था घर में भी बड़ी शांति सी थी। कमरे से बाहर निकला तो रामू काका ने बताया कि माँ-पिताजी कहीं चले गए हैं। आपका खाना फ्रिज में रखा है। आप कहें तो निकाल कर गरम कर दूँ।

'छोड़ो बस एक कप काफी बना कर दे जाओ' कहकर रवि फिर अपने कमरे में घुस गया।'

काफी पीते-पीते उसने रिमोट उठाया। डिश भी गायब थी। चलो आज दूरदर्शन ही देख लेता हूँ। बेमन से उसने दूरदर्शन यूपी लगा दिया।

टी.वी. पर एक पुरानी मैराथन दौड़ की रिकार्डिंग आ रही थी। दौड़ तो उसको पसंद थी। उत्सुकता से उसकी नजरें स्क्रीन पर जम गईं।

सत्ताईस-अट्ठाईस देशों के रनर ग्राउन्ड में दौड़ रहे थे। बड़ा ही मनोहारी दृश्य था। हर किसी के चेहरे पर उत्तेजना और आत्मविश्वास नजर आ रहा था। दूसरे राउण्ड में ही भारत का प्रतिनिधित्व करने वाला कश्मीरा आगे निकल गया। सभी की दृष्टि उसी पर जम गयीं। कुल कितने धावक (रनर) थे ये तो समझना मुश्किल था लेकिन कम से कम तीस तो होंगे ही उसमें कश्मीरा सबसे आगे, राजू के हाथ अपने आप ही ताली बजाने को उठ गये। कश्मीरा की बढ़त जारी थी। तीसरा राउण्ड, चौथा राउण्ड और पाँचवा राउण्ड। कश्मीरा आगे ही आगे। बाकी धावक हालाँकि मुश्किल से दस-पाँच मीटर ही पीछे होंगे पर आगे नम्बर एक पर होना होता है। कैमरा बार-बार कभी ऑडियन्स पर तो कभी कश्मीरा पर जूम हो रहा था। कश्मीरा के चेहरे पर फैला गर्व कैमरे की नजर से साफ नजर आ रहा था। लेकिन ये क्या छठे राउण्ड में लगभग पीछे से दूसरी लाइन में दौड़ रहा धावक धीरे-धीरे कश्मीरा के बिलकुल नजदीक पहुँचता नजर आ रहा था। अब कैमरे की नजर कश्मीरा के चेहरे पर पसीना बहता देख रही थी। जबकि उसके पास पहुँचने वाले धावक का चेहरा बिलकुल सामान्य था। आठवें राउण्ड में एक अन्य धावक भी कश्मीरा के बराबर पहुँच चुका था और पहले पहुँचा धावक तो कश्मीरा से कम से कम दो मीटर आगे था। रवि का पूरा शरीर उत्तेजना से नहा उठा।

दौड़ लगभग पूरी होने को थी और कश्मीरा लक्ष्य से कम से कम पाँच मीटर पीछे दौड़ रहा था। उसके चेहरे पर थकान साफ नजर आ रही थी।

लक्ष्य तक पहुँचते-पहुँचते कश्मीरा उन सत्ताइस-अट्ठाईस धावक में ना जाने कहाँ गुम हो चुका था और दूसरे राउण्ड तक लगभग पीछे दौड़ने वाले धावक का विजयश्री प्रतीक्षा कर रही थी। अचानक टी.वी. पर किसी सीमेंट कंपनी का विज्ञापन आ गया विज्ञापन खत्म होने पर एनाउंसर का चेहरा स्क्रीन पर नजर आया। ''जिंदगी भी कुछ ऐसी ही है दोस्तों यहाँ यह महत्वपूर्ण नहीं है कि कौन दौड़ में प्रथम नजर आ रहा है। महत्वपूर्ण यह है कि दौड़ के अंत तक, लक्ष्य तक पहुँचने तक कौन अपने स्टेमिना को बरकरार रख पाता है। आज जाने कितने छात्रों का परिणाम आया है। निश्चय ही जिन्होंने 89 प्रतिशत अंक पाये हैं वे बधाई के पात्र हैं लेकिन जिन्होंने 50 प्रतिशत अंक पाये है वे भी इस दौड़ में आगे निकल सकते हैं। शर्त एक ही है वे अपना हौंसला बनाये रखें। जिन्दगी की दौड़ के अंक नहीं हौंसला महत्वपूर्ण है। हौंसले को हमेशा बनाये रखना महत्वपूर्ण है।''

तभी दरवाजे पर कार रुकने की आवाज गूँजी। राजू ने उठकर रिमोट से टी.वी. बंद कर दिया। अब उसके सर में दर्द था न चेहरे पर मायूसी। उसके मस्तिष्क में तो बस एक ही वाक्य घूम रहा था- जिन्दगी की दौड़ में अंक नहीं हौंसला महत्वपूर्ण है।''

- आगरा (उ.प्र.)

पुस्तक परिचय

प्रसिद्ध बाल साहित्यकार **श्री श्यामपलट पाण्डेय** की विजया बुक्स 1/10753 सुभाष पार्क गली नं. 3 नवीन शाहदरा दिल्ली 32 द्वारा प्रकाशित दो बाल गीतों की महत्वपूर्ण कृतियाँ जिनमें प्रत्येक रचना बालमन को लुभाने वाली बचपन को गाने वाली विविध- रंगी भावों को अभिव्यक्ति देती है।

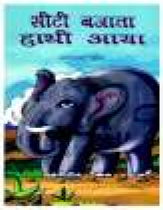

सीटी बजाता हाथी आया
31 रोचक बाल गीत
मूल्य 195/-

पंख मुझे तुम अपने दे दो
76 सुरुचिपूर्ण बाल गीत
मूल्य 350/-

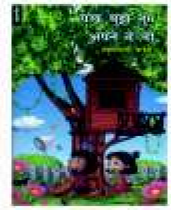

चन्दामामा के पास
प्रकाशक - मध्यप्रदेश लेखक संघ
श्री सदन सिविल लाइन्स दतिया (म.प्र.)
मूल्य 38/-

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार **डॉ. राज गोस्वामी** द्वारा रचित बच्चों के लिए अत्यंत रोचक ही नहीं ज्ञानवर्द्धक 28 बाल कविताएँ।

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार **श्री तरूण कुमार दाधीच** द्वारा जिज्ञासा जगाती जीवन मूल्यों के प्रति आस्था बढ़ाती बाल कहानियाँ।

56 रोटियाँ
प्रकाशक - अनुविन्द पब्लिकेशन
ए-112, हिरणमगरी सेक्टर-14,
उदयपुर 313001 (राज.)
मूल्य 90/-

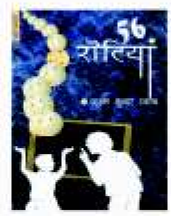

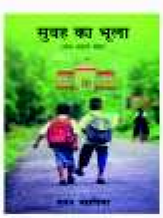

सुबह का भूला
प्रकाशक - नेम प्रकासण
गाँव पोस्ट - डेह जिला नागौर 341022 (राज.)
मूल्य 100/-

सशक्त बाल साहित्यकार **श्री पवन पहाड़िया** द्वारा सृजित बच्चों के चरित्र निर्माण में योगदान सुबोध सरल एवं मनोरंजक ग्यारह बाल कहानियाँ।

आओ ऐसे बनें

- मदनगोपाल सिंहल

सात आठ वर्ष की अवस्था थी उस बालक की। वह अपने पिता के साथ गाँव से शहर की ओर जा रहा था।

मार्ग में सरकार की ओर से मीलों का निर्देश करने के लिए पत्थर लगाये गये होते हैं। बालक उन पत्थरों को बड़े ध्यान से देखता हुआ आगे बढ़ रहा था।

शहर निकट आता दिखाई दिया तो बालक के पिता ने एक राह चलते व्यक्ति ने पूछा - "भैया! यहाँ से नगर कितनी दूर है?"

'दो मील' बालक बीच में ही बोल उठा। जिससे प्रश्न किया गया था वह व्यक्ति अभी अपना मुँह भी न खोलने पाया था।

'तूने यह कैसे जान लिया रे?' पिता ने आश्चर्य के साथ बालक के मुँह की ओर देखते हुए पूछा।

'मीलों के पत्थर देखकर' बालक ने उत्तर दिया।

'लेकिन पत्थरों पर तो अंग्रेजी में लिखा है, और तू तो अंग्रेजी नहीं जानता' पिता ने कहा।

'हाँ, यह सही है' बालक ने उत्तर दिया- 'लेकिन क्रमबद्ध लिखे गये पत्थरों पर अंकित अंकों से ही मैंने अंग्रेजी की संख्या पढ़ना सीख लिया है।'

पिता बच्चे की योग्यता पर अवाक् रह गये। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा।

इस बालक का नाम था ईश्वरचन्द्र जो बड़ा होकर इतना विद्वान बना कि सभी कोई उन्हें केवल 'विद्यासागर' कहने मात्र से ही जान जाते हैं।

देवपुत्र का 'गौरव - विकास'

इन्दौर। देवपुत्र बाल मासिक के यशस्वी संपादक डॉ. विकास दवे मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी के निदेशक मनोनीत हुए हैं। डॉ. दवे का साहित्य चिंतन जो अब देवपुत्र के साथ साथ बड़ों के साहित्य जगत में भी अपनी प्रतिभा बिखेरेगा डॉ. विकास दवे लगभग तीन दशकों से बाल साहित्य जगत के सशक्त हस्ताक्षर तो हैं ही वे प्रखर वक्ता चिंतक विचारक, साहित्यकार और पत्रकार के रूप में भी स्थापित हैं। आप लम्बे समय से अखिल भारतीय साहित्य परिषद और ऐसी अनेक संस्थाओं में महत्वपूर्ण दायित्वों का वहन कर रहे हैं। आपके 1500 से अधिक व्याख्यान हो चुके हैं और साहित्य जगत में आपके विचार महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। देवपुत्र के संदर्भ में तो आप श्री कृष्णकुमार जी अष्ठाना के साहित्य–तप के अनन्य उत्तराधिकारी हैं। डा. दवे की अनेक रचित पुस्तकें और संपादित ग्रंथ साहित्य के कोष की अमूल्य निधि हैं। डॉ. दवे सरस्वती बाल कल्याण न्यास द्वारा संचालित भारतीय बाल साहित्य शोध संस्थान के निदेशक का दायित्व भी कुशलता पूर्वक निर्वाह कर रहे हैं। स्वभाव से अत्यन्त विनम्र सरल और सदा प्रसन्न व्यक्तित्व के धनी डॉ. विकास दवे को इस नए दायित्व ग्रहण के अवसर पर युगबोध परिवार भूरिशः शुभकामनाएँ अर्पित कर स्वयं को भी गौरवान्वित अनुभव कर रहा हैं और माँ भारती से उनके यशस्वी जीवन के लिए प्रार्थना करता है।

यही राष्ट्र का प्राण है

कविता

पंकज कुमार झा

इस धरती के कण-कण में बसता हिन्दुस्तान है।
हिन्दी हो इस देश की भाषा यही राष्ट्र का प्राण है।।
बिन पानी के जैसे सूना सागर का संसार हो।
वैसे बिन हिन्दी के कैसे सब सपने साकार हो।।
अलग हैं प्रांत यहां पर, अलग-अलग भाषा के फूल।
हिन्दी ही वह सूत्र यहाँ पर जिसमें गूंथे सारे फूल।।
मेरी भाषा तेरी भाषा अपनी भाषा हिन्दी हो।
विश्व पटल के मानचित्र पर सबकी भाषा हिन्दी हो।।
दुनियाँ के हर देश ने पायी प्रगति अपनी भाषा में।
भारत की प्रगति कैसे हो अंग्रेजी की अभिलाषा में।।
भारत भूमि भरत भूमि है भारतेंदु है पुत्र जहाँ।
सर्वे भवन्तु सुखिन: का ही गाया जाता सूत्र वहाँ।।
माता मातृभूमि मातृभाषा गौरव की पहचान है।
हिन्दू हिन्दी हिन्दुस्तान पूरी दुनियाँ की शान हैं।।

- चित्तौड़गढ़ (राज.)

छः अंगुल मुस्कान

- ऋषिमोहन श्रीवास्तव

✻ डाक्टर सा. एक व्यक्ति का ऑपरेशन करने जा रहे थे, तभी वह व्यक्ति बोला- डाक्टर सा. एक मिनट रुकिए। और वह पेंट की जेब से पर्स निकालने लगा।
डाक्टर सा. बोले- ''फीस की चिंता क्या करते हो। आपरेशन के बाद ले लूंगा।''
व्यक्ति बोला- ''डाक्टर सा. फीस की बात नहीं। मैं तो आपरेशन के पहले अपने रुपये गिन रहा था।

✻ एक अधिकारी को शिकार का बड़ा शौक था। वे शेर को मारने जंगल चल दिए। शेर कहीं नहीं दिखाई दिया तो अपने एक साथी के साथ पेड़ के नीचे बैठ गए। तभी न जाने कहाँ से वास्तव में शेर आ गया।
तब साथी ने अपने दोस्त से कहा- वर्मा जी शेर आ गया।
वर्मा जी बोले- ''कह दो कल कार्यालय में आ जाए।

- ग्वालियर (म.प्र.)

दैनिक व्यवहार में मातृभाषा का सम्मान कैसे करें?

-उर्मि कृष्ण

हिन्दी मातृभाषा पर भाषण देने, उसका पूजन करने या उसको सिंहासन पर बैठाने की बात करने से कुछ नहीं होगा। यदि आप हिन्दी की उन्नति चाहते हैं, उसको प्रतिष्ठित करना चाहते हैं तो आपको अपने दैनिक व्यवहार में उसे अपनाना होगा। बाकी सरकार कुछ करे या न करे पर आपके कुछ किए बिना मातृभाषा कभी भी पनप नहीं सकती। सरकार से पहले आपको हिन्दी को सम्मान देना होगा। आप यह करें-

दैनिक व्यवहार में इस तरह हिन्दी अपनाएँ -

- अभिवादन- नमस्ते, नमस्कार, प्रणाम से करें।
- घर में सदैव अपनी मातृभाषा बोलें। इससे बच्चे परिचित रहेंगे, वह अपनी बोली बोलेंगे, उसका सम्मान करेंगे। कहीं भी दूर विदेश में जाने पर अपनी पहचान बनाये रखेंगे।
- कभी भी कहीं भी अनावश्यक अंग्रेजी या अन्य दूसरी भाषा न बोलें।
- ऐसे शब्द भी कदापि न बोलें या लिखें जिसका आप अर्थ नहीं जानते।
- अपना सम्पूर्ण हिसाब किताब अपनी भाषा में लिखें।
- अपनी सभी आवश्यक नस्तियां (फाइलें) अपनी भाषा में व्यवस्थित करें।
- सारे आवेदन पत्र हिन्दी अपनी मातृभाषा में लिखें।
- अपने व्यक्तिगत पत्र अपनी भाषा में ही लिखें। यह आपके अपनत्व का परिचय देंगे।
- अपने गाँव जाकर अपनी बोली बोलेंगे तो सबकी नजरों में सम्मान पा जाएंगे, प्रिय बने रहेंगे।
- अपने देश में यात्रा में, तीर्थों में संपर्क भाषा हिन्दी को बनाएं, अंग्रेजी को नहीं।
- यदि किसी नव प्रांत में आपका तबादला हो गया है या लम्बे समय के लिए जा रहे हैं तो वहाँ की भाषा के कुछ शब्द अवश्य सीख लें। हिन्दी के साथ उनका प्रयोग करें।

एक जानकारी के अनुसार अंग्रेजी शब्दकोश में हिन्दी के निम्नलिखित शब्द शामिल कर लिए गए हैं- अंग्रेज, अच्छा, बदमाश, भद्रलोक, चड्डीछाप, देसी, एकदम, इंकलाब, लाख मसाला, महा, मस्ती, नमस्ते, नानक पान, किला, तमाशा, टप्पा, गोरा, जंगली, फिल्मी, यार लहंगा, बिंदास, जिंदाबाद, आलू।

- अम्बाला छावनी (हरियाणा)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी/623/2018-2020 | आर.एन.आय. पं. क्रं. 38577/85
प्रकाशन तिथि 20/08/2020 | प्रेषण तिथि 30/08/2020 | प्रेषण स्थल - आर.एम.एस, इन्दौर

संस्कार संजोना अच्छी बात है
संस्कार फैलाना और अच्छी बात।

वार्षिक शुल्क
180/-

आजीवन शुल्क
1400/-

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र *सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक*

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

*देवपुत्र अब **Jio Net** पर भी !*

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना